All Subject to Patiala Jurisdiction.

साप्ताहिक कृषि समाचार-पत्र

मूल्य : 6/- रुपए

खेती संदेश

Postage Registered No. PB/PTA/0339/2025-2027

WEEKLY KHETI SANDESH

E-mail : khetisandesh2025@gmail.com

Chief Editor : Parminder Kaur • RNI Regd. No. PBBIL/25/A0210 • Issue Dt. 01-12-2025 • Vol.1 No.15 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • Mob. 90410-14575 • Page 12

खरीफ 2025—26 के पहले अग्रिम अनुमान जारी, 17.33 करोड़ टन खाद्यान्न उत्पादन का अनुमान

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने खरीफ सीजन 2025-26 में उत्पादन के पहले अग्रिम अनुमान जारी कर दिये हैं। मंत्रालय द्वारा इस संबंध में जारी सूचना के मुताबिक खरीफ सीजन में खाद्यान्न उत्पादन 17.33 करोड़ टन रहने का अनुमान है, जो पिछले साल (2024-25) के खरीफ उत्पादन के मुकाबले 38.70 लाख टन अधिक है।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि देश में कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा ने फसलों को प्रभावित किया, लेकिन ज्यादातर क्षेत्रों को अच्छे मानसून से काफी लाभ हुआ है, इससे कुल मिलाकर फसलों की अच्छी वृद्धि हुई है। प्रथम अग्रिम अनुमान के अनुसार, वर्ष 2025-26 के दौरान खरीफ चावल उत्पादन 1245.04 लाख टन अनुमानित है, जो गत वर्ष के खरीफ चावल उत्पादन से 17.32 लाख टन ज्यादा है। खरीफ मक्का का उत्पादन 283.03 लाख टन अनुमानित है, जो गत वर्ष के खरीफ मक्का उत्पादन से 34.95 लाख टन अधिक है।

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि प्रथम अग्रिम अनुमान के अनुसार वर्ष 2025-26 के दौरान कुल खरीफ पोषक/मोटा अनाज 414.14 लाख टन और कुल खरीफ दलहन उत्पादन 74.13 लाख टन अनुमानित है, जिसमें तूर 35.97 लाख टन, उड़द 12.05 लाख टन तथा मूंग 17.20 लाख टन का उत्पादन अनुमानित है।

2025-26 के दौरान देश में कुल खरीफ तिलहन का उत्पादन 275.63 लाख टन अनुमानित है। इसमें 110.93 लाख टन मूंगफली का उत्पादन शामिल है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 6.81 लाख टन अधिक है और सोयाबीन उत्पादन 142.66 लाख टन अनुमानित है। गन्ने का उत्पादन 4756.14 लाख टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 210.03 लाख टन वृद्धि दर्शाता है। कपास का उत्पादन 292.15 लाख गांठें (प्रति गांठ 170 किलोग्राम) तथा पटसन एवं मेस्ता 83.45 लाख गांठों (प्रति गांठ 180 किलोग्राम) का उत्पादन अनुमानित है।

मंत्रालय के मुताबिक यह अनुमान गत वर्षों की उपज प्रवृत्तियों, अन्य जमीनी स्तर के इनपुट और क्षेत्रीय अवलोकन तथा मुख्यत: राज्यों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर तैयार किए गए हैं। फसल कटाई प्रयोगों से प्राप्त वास्तविक उपज आंकड़े आने पर इसमें संशोधन किया जाएगा।

कांगड़ा में किसानों पर दोहरा मौसमीय प्रहार – न बारिश, न सिंचाई - खेती पर गहरा संकट

कांगड़ा जिले के निचले मैदानी इलाकों में किसानों के सामने इस बार मौसम और व्यवस्थोंदोनों ही मोर्चों से बड़ी चुनौती खड़ी हो गई है। लंबे समय से बारिश नहीं होने और सिंचाई सुविधाओं के ठप पड़ जाने से रबी सीजन की फसलों पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। यह स्थिति जिले के लगभग 2.35 लाख कृषक परिवारों की आजीविका पर सीधा प्रभाव डाल सकती है।

गेहूं की बिजाई थमी, सरसों सूखने की कगार पर

सामान्यत: नवंबर के दूसरे पखवाड़े में शुरू होने वाली गेहूं की बिजाई इस बार सूखे हालात के कारण रुकी हुई है। अगेती सरसों, चना, मसूर और हरे चारे की फसलें भी लगातार पड़ रहे ड्राई स्पेल के कारण मुरझाने लगी हैं। किसानों का कहना है कि यदि जल्द बारिश नहीं हुई तो रबी सीजन का उत्पादन गंभीर रूप से प्रभावित होगा।

सिंचाई सुविधाएं भी ठप, किसान पूरी तरह बारिश पर निर्भर

किसानों कुलजीत राणा, हरदीप सिंह और पवन शर्मा का कहना है कि हर वर्ष मौसम की मार झेलने के बाद इस बार सिंचाई की व्यवस्था भी जवाब दे गई है, जिससे उनकी कठिनाइयाँ और बढ़ गई है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, यदि वर्तमान मौसम की स्थिति इसी तरह बनी रही, तों जैसी प्रमुख फसलों में उत्पादन भारी मात्रा में घट सकता है। नूरपुर, जवाली और फतेहपुर के किसान बारिश का इंतजार करते हुए गंभीर चिंता में हैं।

किसानों की चिंता बढ़ी

बार-बार सूखे और सिंचाई के साधनों की असफलता ने किसानों को इस स्थिति में छोड़ दिया है कि वे फिर से पूरी तरह प्रोंतिक वर्षा पर निर्भर हो गए हैं। किसान संगठनों ने मांग उठाई है कि सरकार जल्द से जल्द नलकूपों की मरम्मत कराकर वैकल्पिक सिंचाई सुविधाओं को चालू करे।

कांगड़ा में मौसम और तकनीकी व्यवस्थाओं की दोहरी मार से किसानों की मुश्किलें बढ़ रही हैं। यदि प्रशासन समय पर कदम नहीं उठाता, तो इस रबी सीजन में जिले को बड़े पैमाने पर उत्पादन घटने की चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

किसानों के हित में जारी

बीजोपचार

अच्छी फसलों का मूल आधार

बीजोपचार के लाभ

- ★ अधिक अंकुरण
- ★ अधिक प्रबल पौधे
- ★ आरंभिक बिमारियों का प्रभावी नियंत्रण
- ★ स्वस्थ पौधों की संख्या ज्यादा

देश के सभी किसान, पढ़ें होकर होशियार

अच्छी पैदावार तभी होगी, जब बीजों का हो सही उपचार

साम्भर झील में प्रदूषण

जहरीले पानी से प्रवासी पक्षियों के जीवन पर संकट

पंकज चतुर्वेदी

साम्भर झील, राजस्थान में प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है, लेकिन प्रदूषण, एवियन बोटुलिज्म और जलवायु परिवर्तन के कारण यह पक्षियों के लिए खतरे का कारण बन गई है।

राजस्थान की साम्भर झील कई वर्षो से प्रवासी पक्षियों के लिए मौत का मैदान बनती जा रही है। वर्ष 2019 में यहां हजारों पक्षी मरे, पिछले वर्ष लगभग 200 और इस साल भी करीब 70 पक्षियों के शव मिले। मारे गए पक्षियों की जांच के लिए सेंटर फॉर एनिमल डिजीज रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक्स लैब, बरेली को भेजे गए सैंपलों से पुष्टि हुई कि इन मौतों का मुख्य कारण एवियन बोटुलिज्म ही है, जो लगातार झील में पक्षियों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है।

भारत में विदेशी पक्षियों के लिए सबसे बड़े ठिकाने में से एक साम्भर झील में आने वाले मेहमानों की संख्या लगातार घट रही है। वैसे यहां कोई ढाई सौ प्रजातियों के पक्षी आते रहे हैं, लेकिन इस बार यह संख्या 110 ही रही है। सभी जानते हैं कि आर्कटिक क्षेत्र और उत्तरी ध्रुव में जब तापमान शून्य से चालीस डिग्री तक नीचे जाने लगता है, तो वहां के पक्षी भारत की ओर आ जाते हैं। ऐसा हजारों साल से हो रहा है, ये पक्षी किस तरह रास्ता पहचानते है, किस तरह हजारों किलोमीटर उड़ कर आते हैं, विज्ञान के लिए भी अनसुलझी पहेली है।

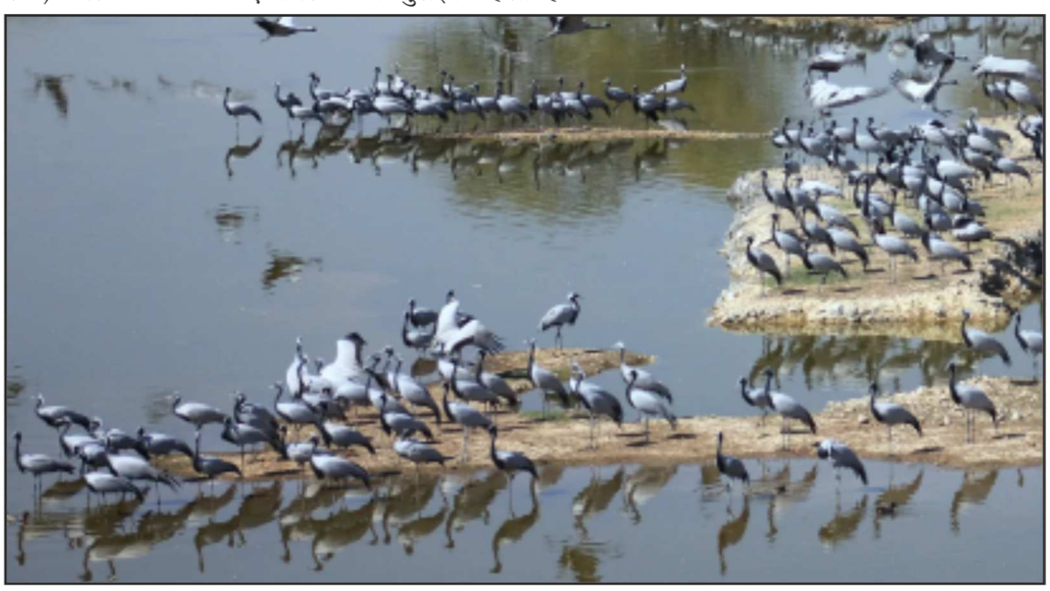

भारत की सबसे विशाल खारे पानी की झील 'साम्भर' का विस्तार 190 किलोमीटर, लंबाई 22.5 किलोमीटर है। इसकी अधिकतम गहराई तीन मीटर तक है। अरावली पर्वतमाला की आड़ में स्थित यह झील राजस्थान के तीन जिलों – जयपुर, अजमेर और नागौर तक विस्तारित है। अब यह झील 4700 वर्ग किलोमीटर में सिमट गई है। चूंकि भारत में नमक के कुल उत्पादन का लगभग नौ प्रतिशत–196000 टन नमक यहां से निकाला जाता है, अत: नमक-माफिया भी यहां की जमीन पर कब्जा करता रहता है। इस विशाल झील के पानी में खारेपन का संतुलन बनाए रखने के लिए इसमें छोटी नदियों से मीठा पानी लगातार मिलता रहता है तो उत्तर में कांतली, पूर्व में बांदी, दक्षिण में मासी और पश्चिम में लूणी नदी में इससे बाहर निकला पानी जाता रहा है। दीपावली के बाद यहां विदेशी पक्षियों के झुंड आने शुरू हो जाते हैं।

पक्षियों में एवियन बॉटुलिज्म नामक रोग मूल रूप से मांसाहारी नभचरों में होता है। यह बीमारी क्लोस्ट्रिडियम बॉट्यूलिज्म नामक बैक्टीरिया की वजह से फैलती है। यहां साम्भर झील के जल में लगातार प्रदूषण की मात्रा बढ़ने से भी यह स्थान पक्षियों के लिए सुरक्षित नहीं रहा है। यहां पर पक्षियों की मौत का एक कारण 'हाईपर न्यूट्रिनिया' भी रहा है। नमकीन जल में सोडियम की मात्रा ज्यादा होने पर, पक्षियों के तंत्रिका तंत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। वे खाना-पीना छोड़ देते हैं। उनके पंख एवं पैरों में लकवा हो जाता है। अंत में प्राण निकल जाते हैं। अभी तक तो पक्षियों की प्रारंभिक मौत हाईपर न्यूट्रिनिया से ही हुई। बाद में उनमें एवियन बॉटुलिज्म के जीवाणु विकसित हुए और ऐसे मरे पक्षियों को जब अन्य पक्षियों ने भक्षण किया तो बड़ी संख्या में उनकी मौत हुई।

पक्षी विशेषज्ञ के मुताबिक साल 2025 में त्रासदी का प्रारंभ साम्भर के नामक वाले इलाके से हुआ है। औद्योगिक अपशिष्ट, जिसमें भारी धातुएं और रासायनिक तत्व होते हैं, पक्षियों की तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करता है। नमक की उच्च सांद्रता से पक्षियों के पंखों पर क्रिस्टल जम जाते हैं, जिससे हाइपोथर्मिया या डूबने से मौत हो जाती है।

वर्ष 2010 में भी पक्षियों की मौत के बाद गठित कपूर समिति की रिपोर्ट की सिफारिशों पर अमल नहीं हुआ। दो साल पहले भी हाई कोर्ट ने साम्भर झील को रामसर साइट घोषित किए जाने के बाद यानी 24 मार्च, 1990 के बाद इस झील पर दी गई लीज, निर्माण, अवैध कब्जों की जानकारी और झील को अतिक्रमण से बचाने के उपायों की भी जानकारी मांगी है। सरकार की आधी-अधूरी जानकारी के चलते झील का पानी और खराब होता गया। साम्भर झील के पर्यावरण के साथ लंबे समय से की जा रही छेड़छाड़ भी पक्षियों के यहां से मुंह मोड़ने का बड़ा कारण है। एक तो साम्भर साल्ट लिमिटेड ने नमक निकालने के ठेके कई कंपनियों को दे दिए जो मानकों की परवाह किए बगैर गहरे कुएं और झील के किनारे दूर तक नमकीन पानी एकत्र करने की खाई बना रहे है। वहीं परिशोधन के बाद गंदगी को इसी में डाल दिया जाता है। यहां किसी भी नगर कस्बे में घरों से निकलने वाले गंदे पानी को परिष्कृत करने की व्यवस्था नहीं है और हजारों लीटर गंदा-रासायनिक पानी हर दिन इस झील में मिल रहा है।

यह जलवायु परिवर्तन की त्रासदी है कि इस साल औसत से कोई 46 प्रतिशत ज्यादा पानी बरसा। इससे झील के जल ग्रहण क्षेत्र का विस्तार हो गया। चूंकि इस झील में नदियों से मीठा पानी की आवक और अतिरिक्त खारे पानी को नदियों में मिलने वाले मार्गो पर अतिक्रमण हो गए हैं, सो पानी में क्षारीयता का स्तर नैसर्गिक नहीं रह पाया। भारी बरसात के बाद यहां तापमान फिर से 27 डिग्री के पार चला गया। इससे पानी का क्षेत्र सिकुड़ा और उसमें नमक की मात्रा बढ़ गई, जिसका असर झील के जलचरों पर भी पड़ा।

उल्लेखनीय है कि साम्भर साल्ट लिमिटेड ने झील के एक हिस्से को एक रिसॉर्ट को दे दिया है। यहां का सारा गंदा पानी इसी झील में मिलाया जाता है। इसके अलावा कुछ सौर ऊर्जा परियोजनाएं और फिर तालाब की मछली का ठेका भी दिया हुआ है। जब पक्षी को ताजा मछली नहीं मिलती तो वह झील में तैर रही गंदगी को खाने लगता है। यह सब बातें भी पक्षियों के इम्यून सिस्टम के कमजोर होने व उनके सहजता से विषाणु के शिकार हो जाने का कारक हैं।

वन क्षेत्र के मामले में विश्व स्तर पर नौवें स्थान पर पहुंचा भारत : एफ.ए.ओ. रिपोर्ट

दुनिया का कुल वन क्षेत्र 4.14 अरब हैक्टेयर, जो पृथ्वी की 32 प्रतिशत भूमि पर

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) की एक नई रिपोर्ट के अनुसार भारत कुल वन क्षेत्र के मामले में विश्व स्तर पर 9वें स्थान पर पहुंच गया है और वार्षिक वन क्षेत्र वृद्धि में अपना तीसरा स्थान भी बरकरार रखा है। पर्यावरण मंत्रालय ने कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत के बड़े पैमाने पर वनरोपण और आम लोगों की अगुवाई में हुए वन संरक्षण प्रयासों की सफलता को दर्शाता है।

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि भारत का 10वें स्थान से 9वें स्थान पर पहुंचना सतत वन प्रबंधन और पारिस्थितिक संरक्षण के मामले में एक बड़ी उपलब्धि है। मंत्री ने कहा कि विशेष रूप से एक पेड़ माँ के नाम पहल के तहत वृक्षारोपण अभियानों में बढ़ती जन भागीदारी और बड़े पैमाने पर राज्य सरकारों के अभियानों ने इस प्रगति में योगदान दिया है।

एफ.ए.ओ. की रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया का कुल वन क्षेत्र 4.14 अरब हैक्टेयर है, जो पृथ्वी की 32 प्रतिशत भूमि पर है। रिपोर्ट के अनुसार आधे से अधिक वन क्षेत्र (54 प्रतिशत), सिर्फ 5 देशों – रूस, ब्राजील, कनाडा, अमेरिका और चीन में है। ऑस्ट्रेलिया, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और इंडोनेशिया के बाद भारत दुनिया के शीर्ष 10 वन समृद्ध देशों में शामिल है।

1990 से 2025 के बीच वन क्षेत्र में वृद्धि दर्ज

चीन में 2015 से 2025 के बीच वन क्षेत्र में सबसे अधिक वार्षिक शुद्ध वृद्धि 1.69 मिलियन हैक्टेयर प्रति वर्ष दर्ज की गई, उसके बाद रूसी संघ 9,42,000 हैक्टेयर और भारत 1,91,000 हैक्टेयर के साथ दूसरे स्थान पर है। महत्वपूर्ण वन विस्तार वाले अन्य देशों में तुर्किये (1,18,000 हैक्टेयर), ऑस्ट्रेलिया (1,05,000 हैक्टेयर), फ्रांस (95,900 हैक्टेयर), इंडोनेशिया (94,100 हैक्टेयर), दक्षिण अफ्रीका (87,600 हैक्टेयर), कनाडा (82,500 हैक्टेयर) और वियतनाम (72,800 हैक्टेयर) शामिल हैं। मूल्यांकन से पता चला है कि एशिया एकमात्र ऐसा क्षेत्र है, जहां 1990 से 2025 के बीच वन क्षेत्र में वृद्धि दर्ज की गई है, जिसमें चीन और भारत का योगदान सबसे अधिक है। एफ.ए.ओ. ने कहा कि एशिया में वन क्षेत्र विस्तार ने वैश्विक वनों की कटाई को धीमा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जबकि दक्षिण अमरीका और अफ्रीका में वनों की सबसे अधिक कटाई हुई है।

गेहूं की फसल में बीजोपचार और खरपतवार नियंत्रण के वैज्ञानिक तरीके

आर. एस. चौहान, नरेन्द्र सिंह एवं प्रशांत चौहान, कृषि विज्ञान केन्द्र, पंचकूला, चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (मो. 94162—44487)

गेहूं की नई—नई किस्मों का चयन, उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का प्रयोग तथा सिंचाई के समुचित प्रबंध किए जाने के कारण इसके उत्पादन में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है। कृषि की उन्नत तकनीकों को अपनाए जाने के परिणामस्वरूप किसानों द्वारा पिछले तीन से चार वर्षों में गेहूं की पैदावार में उल्लेखनीय सुधार लाया गया है। हालांकि, कुछ ऐसे बिन्दु भी पाए गए हैं, जिन पर यदि समय पर ध्यान दिया जाए तो उत्पादन में और अधिक वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है।

रबी मौसम की फसलों में गेहूं को प्रमुख स्थान प्रदान किया गया है। गेहूं की नई-नई किस्मों का चयन, उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का प्रयोग तथा सिंचाई के समुचित प्रबंध किए जाने के कारण इसके उत्पादन में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है। कृषि की उन्नत तकनीकों को अपनाए जाने के परिणामस्वरूप किसानों द्वारा पिछले तीन से चार वर्षों में गेहूं की पैदावार में उल्लेखनीय सुधार लाया गया है। हालांकि, कुछ ऐसे बिन्दु भी पाए गए हैं, जिन पर यदि समय पर ध्यान दिया जाए तो उत्पादन में और अधिक वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। कृषि विभाग एवं कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा समय-समय पर किसानों को बीजोपचार एवं खरपतवार प्रबंधन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। यद्यपि किसानों द्वारा इन जानकारियों के अनुसार कार्य किए जाने का प्रयास किया जाता है, फिर भी कुछ त्रुटियां रह जाने के कारण अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते है। इस लेख में इन्हीं महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

1. बीजोपचार : गेहूं की फसल में बहुत सी ऐसी बीमारियां लगती है जिनकी रोकथाम केवल बीजोपचार से ही सम्भव है। किसान बीज उपचार करते भी है लेकिन बीजाई के दौरान समय की कमी के कारण सही ढंग से बीच उपचार नहीं करते। इससे बीज उपचार पर होने वाला खर्च भी हो जाता है और वांछित परिणाम नही मिलते।

अ) गेहूं में दीमक से बचाव के लिये 40 किलोग्राम बीज को 60 मिलीलीटर क्लोरपाइरिफॉस 20 ई.सी. या 100 मिलीलीटर फारमोथियान 25 ई.सी. दवा से उपचारित करें। इन कीटनाशकों में से किसी एक को पानी में मिलाकर 2 लीटर घोल बना लें। बीज को पक्के फर्श पर या पोलीथीन शीट पर एकसार बिछा लें और इस दो लीटर घोल को बीज के उपर छिड़क दें और बीज को हिला दें। किसान भाई घोल को बराबर रुप से छिड़कने के लिये यदि स्प्रे पम्प का प्रयोग करें तो घोल सभी दानों पर समान रुप से लगेगा और हाथ से छिड़काव की बजाय घोल जमीन पर या पोलीथीन शीट में नीचे बह कर बेकार नहीं जाएगा। इसके बाद उपचारित बीज को रात भर सूखने दें। तद्पश्चात इस उपचारित बीज को फफूंद जनक रोगों से बचाने के लिये फफूंदनाशियों से उपचारित करें।

ब) खुली कंगियारी (लुज स्मट) व पत्तों की कंगियारी की रोकथाम के लिये उपर्युक्त उपचारित बीज को वीटावैक्स या बैविस्टीन 2 ग्राम या टैब्यूकॉनाजाल (रैक्सिल-2 डी.एस.) 1 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से सूखा उपचार करें।

स) करनाल बंट की रोग की रोकथाम के लिये कीटनाशी दवा द्वारा उपचारित बीज को थीराम 2 ग्राम या टैब्यूकॉनाजाल (रैक्सिल-2 डी.एस.) 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

2. खरपतवार नियन्त्रण : खरपतवार किसी भी फसल के उत्पादन में कमी का मुख्य कारक है। गेहूं की फसल में कई प्रकार के खरपतवार जैसे कनकी (गुल्ली डण्डा), पोआ घास, पीत पापड़ा, कंटीली, जंगली पालक, जंगली जई, बाथु, कंडाई हिरणखुरी आदि

मुख्य तौर पर नुकसान पहुंचाते हैं। किसान यदि खरपतवारों का सही नियन्त्रण करना चाहते हैं तो गेहूं की समय पर बिजाई अवश्य करें तथा सिफारिश किए गये खरपतवारनाशों का खरपतवार की बताई गई अवस्था पर ही छिड़काव करें।

गेहूं में पाए जाने वाले खरपतवारों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में बांटा गया है :

क) चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार : बाथु, जंगली पालक, मोथा, हिरणखुरी, कृष्णनील, पीतपापड़ा, चटरी मटरी, मालवा, प्याजी, कंडाई।

नियन्त्रण :

1. निराई-गुड़ाई : खेत में नमी संरक्षण व खरपतवार नियन्त्रण के लिए पहली सिंचाई के बाद खुरपे या कसोले से एक या दो गुड़ाइयां करनी चाहियें। इस कार्य के लिये व्हील हो ब्लेड का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस विधि द्वारा केवल चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों का ही नियन्त्रण किया जा सकता है। संकरी पत्ती व घास जाति के खरपतवारों के लिये रसायनों का प्रयोग करना उचित रहता है।

2. चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिये 250 ग्राम 2, 4 डी सोडियम साल्ट (80 प्रतिशत) या 300 मिलीलीटर 2,4 डी एस्टर (34.6 प्रतिशत) या 8 ग्राम मैटसल्फ्यूरॉन (एलग्रीप या एल्ली) या 20 ग्राम एफीनिटी को 200-250 लीटर पानी में घोल कर गेहूं बिजाई के 30-35 दिन बाद प्रति एकड़ छिड़काव करें।

शेष पृष्ठ 8 पर

No.1 RURAL WEEKLY

Now Think Before Advertising

KHETI DUNIYAN RETAINS LEADERSHIP IN READERSHIP

KHETI DUNIYAN

VOICE OF THE FARMERS

KD COMPLEX, GAUSHALA ROAD, NEAR SHER-E-PUNJAB MARKET, PATIALA-147001 (PB.) INDIA

Mob. 90410-14575

khetiduniyan1983@gmail.com

खेती संदेश

KHETI SANDESH

मुख्य कार्यालय :
9–ए, अजीत नगर,
पटियाला–147001
(पंजाब)
मो. 98151–04575

कार्पोरेट कार्यालय :
के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड,
नजदीक शेरे पंजाब मार्केट,
पटियाला–147001
(पंजाब)
मो. 90410–14575

वर्ष : 01 अंक : 15
तिथि : 01-12-2025

सम्पादक
परमिंदर कौर

सम्पादकीय बोर्ड
डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझेले

Editor : **PARMINDER KAUR**
Printer, Publisher and Owner of Weekly **'KHETI SANDESH'** Printed at **Drishti Printers**, Dasmesh Market, Near Sher-e-Punjab Market, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) and published from **Kheti Sandesh**, House No. 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.). E-mail : khetisandesh2025@gmail.com Mob. 90410-14575, RNI No.**PBBIL/25/A0210**

ज्ञानेन्द्रा रावत

देश-दुनिया में जिस गति से पेड़ों की संख्या घट रही है, उससे पारिस्थितिकी, जैव विविधता, कृषि, मानव जीवन और भूमि स्थिरता के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया। वैज्ञानिक चेतावनियों व जंगल बचाने के प्रयासों के बावजूद पेड़ कटाई और तेज हो गई। कुदरती कारण भी वन नष्ट कर रहे हैं।

दुनिया में आज जलवायु परिवर्तन से मुकाबले की दिशा में पेड़ों और जंगलों की महत्ता की चर्चा जोरों पर है। इसका प्रमुख कारण है कि जलवायु परिवर्तन के चलते संतुलित और समग्र विकास का लक्ष्य समूची दुनिया के लिए बड़ी चुनौती बन गया है। जिस गति से पेड़ों की संख्या घट रही है, उससे पर्यावरण ही नहीं, बल्कि पारिस्थितिकी, जैव विविधता, कृषि, मानवीय जीवन और भूमि की दीर्घकालिक स्थिरता पर भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है।

वास्तविकता यह है कि हर वर्ष दुनिया में एक करोड़ हैक्टेयर जंगल नष्ट हो रहे हैं। कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने इसका खुलासा किया है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, कीड़े-मकोड़े भी प्रति वर्ष 3.5 करोड़ हैक्टेयर जंगलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि मानव जाति जैव विविधता के विनाश की ओर अग्रसर है, जबकि यही जैव विविधता हमें अनेक बीमारियों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यदि वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक नहीं लगी, तो प्रकृति की लय पूरी तरह से बिगड़ जाएगी और वैश्विक तापमान में 2 डिग्री सैल्सियस की वृद्धि को रोक पाना अत्यंत कठिन हो जाएगा। ऐसी स्थिति में सूखा और स्वास्थ्य संबंधी जोखिम बढ़ेंगे, जिससे आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होगी। वन न केवल हमें गर्मी से राहत प्रदान करते हैं, बल्कि जैव विविधता को बनाए रखने, कृषि की स्थिरता को सुदृढ़ करने, सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करने और जलवायु को संतुलित बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दरअसल, आज जो स्थिति वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर बनी हुई है, वह मानव के लोभ का ही परिणाम है। इसका दुष्परिणाम हमारे सामने मौसम में आए भीषण परिवर्तन और पारिस्थितिकीय तंत्र के संतुलन के विघटन के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। इससे न केवल पर्यावरण, बल्कि सामाजिक और आर्थिक ढांचा भी चरमराने लगा है। दशकों से वैज्ञानिक, पर्यावरणविद् और वनस्पति एवं जीवविज्ञानी यह चेतावनी दे रहे हैं कि अब हमारे पास पुरानी परिस्थितियों को पुनर्स्थापित करने के लिए बहुत कम समय बचा है।

यदि देश की बात करें, तो उत्तराखंड में बीते 8-9 वर्षों के दौरान ढाई लाख से अधिक पेड़ काटे जा चुके हैं। इनमें एक लाख से अधिक पेड़ 'ऑल वेदर रोड' परियोजना के तहत तथा शेष पेड़ पर्यटन, देहरादून से दिल्ली तक सड़क चौड़ीकरण, ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना और सुरंग आधारित परियोजनाओं के नाम पर काटे गए हैं। इन परियोजनाओं के चलते देवदार, बांज, राई, कैल जैसी दुर्लभ प्रजातियों के पेड़ों का अस्तित्व ही मिटा दिया गया है। विकास के नाम पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई का यह सिलसिला पूरे देश में जारी है। अमेरिका की एंडएम यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के एक अध्ययन में सामने आया है कि पेड़-पौधों की उपस्थिति मानसिक तनाव से मुक्ति दिलाने में सहायक होती है। करीब 6.13 करोड़ मानसिक रोगियों पर किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि हरियाली के बीच रहने वाले लोगों में अवसाद की आशंका बहुत कम पाई गई।

पिछले दो दशकों में पूरी दुनिया में 78 मिलियन हैक्टेयर पहाड़ी जंगल नष्ट हो चुके हैं, जबकि पहाड़ 85 प्रतिशत से अधिक पक्षियों, स्तनधारियों और उभयचरों का आश्रय स्थल है। गौरतलब है कि हर वर्ष जितना जंगल नष्ट हो रहा है, उसका क्षेत्रफल लगभग एक लाख तीन हजार वर्ग किलोमीटर है, जो जर्मनी और नार्डिक देशों-आइसलैंड, डेनमार्क, स्वीडन और फिनलैंड- के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर है। इसके अनुपात में नए जंगलों के रोपण की गति बहुत धीमी है।

दक्षिण अमेरिका के अमेजन बेसिन में फैले वर्षावनों की स्थिति भी चिंताजनक है। बढ़ते तापमान, भयावह सूखा, वनों की अंधाधुंध कटाई और आग की घटनाओं के चलते अमेजन के जंगल विनाश के कगार पर हैं। अब तक अमेजन का लगभग 18 प्रतिशत क्षेत्र नष्ट हो चुका है। जंगलों के विनाश में आग एक बड़ा कारक बन गई है, जिससे हर साल लाखों हैक्टेयर वनक्षेत्र आग की भेंट चढ़ जाता है।

साल 2023 में दुनिया भर में 37 लाख हैक्टेयर जंगल नष्ट हुए, जबकि भारत में इस वर्ष के दौरान 21,672 हैक्टेयर वन क्षेत्र समाप्त हो गया। वर्ष 2013 से 2023 के बीच के दस वर्षों में भारत में हुए 95 प्रतिशत वनों के विनाश में अवैध कटाई और जंगलों में आग की घटनाओं की बड़ी भूमिका रही है। यूके स्थित 'साइट यूटिलिटी बिडर' की नई रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पिछले 30 वर्षों के दौरान जंगलों की कटाई में भारी वृद्धि हुई है। विशेष रूप से 2015 से 2020 के बीच पांच वर्षों में जंगलों की कटाई चरम पर रही है।

जैव विविधता के संरक्षण में वनों की उपयोगिता सर्वविदित है, लेकिन हम इन्हीं वनों के साथ खिलवाड़ कर अपने जीवन के लिए खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। बीते तीन दशकों में हमने वनों का बहुत बड़ा क्षेत्र मानवीय स्वार्थ के चलते समाप्त कर दिया है। दुखद बात यह है कि जंगलों को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बावजूद वनों की कटाई और तेज हो गई है। सच्चाई यह है कि आज दुनिया में हर मिनट 21.1 हैक्टेयर जंगल समाप्त हो रहे हैं।

यदि अब भी हम नहीं चेते, तो हमारा यह मौन हमें कहां ले जाएगा? क्या मानव सभ्यता सुरक्षित रह पाएगी? यह सोचने का समय अब नहीं, कार्य करने का समय है। प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबंधन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद् हैं।

गोभीवर्गीय सब्ज़ियों में कीट नियंत्रण कैसे करें?

डॉ. प्रेम चन्द शर्मा, प्राध्यापक (कीट विज्ञान) एवं अधिष्ठाता, कृषि संकाय
अभिलाषी विश्वविद्यालय, चैलचौक, ज़िला मण्डी–175028 (हिमाचल प्रदेश)

गोभीवर्गीय सब्ज़ियों की सब्ज़ियों में बन्दगोभी, फूलगोभी, ब्रोकली तथा गांठगोभी इत्यादि प्रमुख हैं। यह सब्ज़ियां किसानों की आय का प्रमुख साधन हैं। कीटों के आक्रमण से इन सब्ज़ियों के उत्पादन में लगभग 20 से 25 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। ये कीट सब्ज़ी उत्पाद की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। इस लेख में गोभीवर्गीय सब्ज़ियों में हानि पहुंचाने वाले प्रमुख कीटों तथा उनके प्रबंधन के बारे में बताया गया है।

1. डायमण्ड बैक मॉथ : इस कीट का प्रौढ़ पतंगा स्लेटी

रंग का होता है, जिसके अगले पंखों पर सफेद हीरे जैसी आकृति बनती है। इस कीट की सुण्डियां हरे रंग की होती हैं, जो छूने पर एकदम उछलती हैं। पत्तों को हिलाने पर ये धागे जैसे पदार्थ की सहायता से नीचे लटक जाती हैं। छोटी सुण्डियां पत्तों को खुरच कर खाती हैं तथा सफेद झिल्ली शेष छोड़ती हैं। बड़ी सुण्डियां पत्तों पर गोल सुराख बना देती हैं। पत्ते नष्ट होने पर सब्ज़ियों की पैदावार पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2. बन्दगोभी की तितली : इस तितली की सुण्डी मखमली

गहरे हरे रंग की होती है, जिस पर धब्बे पीले रंग की धारियां तथा सफेद बाल होते है। नवजात सुंडियां समूह में रह कर पत्तों को खाती रहती है, जबकि बड़ी सुण्डियां खेत में फैल कर पत्तों को छलनी कर देती हैं। अधिक प्रकोप की अवस्था में पत्तों की शिराएं ही शेष रह जाती हैं तथा उपज में कमी आ जाती है।

3. सेमीलूपर : इस कीट की सुण्डियां हरे रंग की होती हैं तथा चलते समय सुण्डी के शरीर पर कूबड़ जैसा बन जाता है। यह सुण्डियां भी बन्दगोभी की तितली की सुण्डियों की तरह पत्तों व फूलों को खाकर फसल को हानि पहुंचाती हैं।

सुण्डियों का प्रबंधन : बन्दगोभी की तितली के अण्डों व सुण्डियों को एकत्रित करके नष्ट कर दें। कीट प्रकोप होने पर 1 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ई.सी. या 2 मिलीलीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. या 1 मिलीलीटर साइपरमैथरिन 10 ई.सी. या 1.5 मिलीलीटर नोवाल्युरॉन 10 ई.सी. या 1 मिलीलीटर स्पाइनोसैड 2.5 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। छिड़काव के बाद 7 दिनों तक सब्ज़ी का प्रयोग न करें। बन्दगोभी की 25 कतारों के बाद सरसों की 2 कतारें लगाने से भी इस कीट का प्रकोप मुख्य फसल पर कम हो जाता है।

4. तम्बाकू की सुण्डी : व्यस्क कीट भूरे रंग के पतंगे होते हैं, जिनके पंखों पर काली

सफेद मखमली धारियां होती हैं। मादा कीट पत्तों की निचली सतह पर समूह में अण्डे देते है, जिन्हें रूई जैसे पदार्थ से ढक दिया जाता है। इन अण्डों से गहरे रंग की सुण्डियां निकलती है, जो शुरू की अवस्था में इकट्ठी रहती हैं तथा बड़े होने पर पूरे खेत में फैल कर पत्तों को पूरी तरह नष्ट कर देती हैं। फल आने पर ये सुण्डियां फलों को भी कट कर देती हैं।

प्रबन्धन : सुण्डियों को प्रारम्भिक अवस्था में ही इकट्ठा कर नष्ट कर दें। बड़ी सुण्डियों पर अधिकतर कीटनाशकों का कोई असर नहीं होता है। फिर भी 1 मिलीलीटर साइपरमैथरिन 10 ई.सी. या 0.4 ग्राम इमामैक्टिन बैन्जोएट 5 एस.जी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करने से नियंत्रण किया जा सकता है। जैविक कीटनाशी एन.पी.वी. से बनी सपोडोकिल का प्रयोग नवजात सुण्डियों पर बताई गई मात्रा में छिड़काव किया जा सकता है।

5. तेला कीट : यह कीट हरे पीले रंग या हल्के काले भूरे रंग के होते है तथा पत्तों, शाखाओं व फूलों से जूं की तरह चिपके रहते हैं। दिसम्बर से मार्च तक ये कीट पौधों को हानि पहुंचाते हैं। ये कीट समूह में रह कर पौधों से रस चूसते रहते है व एक चिपचिपा तरल पदार्थ पत्तों पर छोड़ते है, जिस पर नमी होने पर काली फफूंदी आ जाती है। इससे पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया पर

बुरा प्रभाव पड़ता है। कीट का अधिक प्रकोप होने पर पत्ते मुड़ जाते हैं और पौधों की वृद्धि रुक जाती है। तेला कीट पौधों में विषाणु रोग भी फैलाता है।

प्रबन्धन : फूल वाली फसल पर कीट प्रकोप होने पर 1 मिलीलीटर मैलाथियॉन 50 ई.सी. या 0.5 ग्राम एसिटामिप्रिड 20 एस.पी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। बीज वाली फसल पर पौधों के किनारे पर मिट्टी में 33 किलोग्राम कार्बोफ्यूरॉन 3 सी.जी. के दाने प्रति हैक्टेयर की दर से मिलायें या फसल पर 1.0 मिलीलीटर डाइमैथोएट 30 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर तेला कीट के आने पर छिड़काव करें।

6. लाल चींटी : कई स्थानों पर लाल चींटियों का आक्रमण पाया गया है। यह चींटियां नवरोपित पौधों की रोंयदार जड़ों और छाल पर पलते है तथा प्रभावित पौधे सूख कर मर जाते हैं। रोपाई के समय 2.0 लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. को 25 किलोग्राम सूखी रेत में मिला कर प्रति हैक्टेयर की दर से खेतों में मिलाएं।

7. पेंटिड बग : इस कीट के शिशु व प्रौढ़ पौधों के पत्तों और फलियों से रस चूसते रहते हैं, जिसके कारण बीज सिकुड़ जाता है और उपज में कमी आ जाती है। अधिक प्रकोप होने पर 1.0 मिलीलीटर डाइमैथोएट 30 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। फूल आने पर छिड़काव शाम के समय करें तथा नज़दीक में रखे मौनगृहों के द्वार दूसरे दिन बन्द रखें।

किसान वर्ग अपनी सब्ज़ियों को इन हानिकारक कीटों से सिफारिश किए गए कीटनाशकों का उचित प्रयोग करके बचा सकते हैं तथा अधिक पैदावार ले सकते हैं। किसान वर्ग यह भी ध्यान रखे कि किसी भी कीटनाशक का लगातार दो बार प्रयोग न करें। कीटनाशक छिड़काव से पहले तोड़ने लायक सब्ज़ियां तोड़ लें। यह भी ध्यान दें कि फसल पर कीटनाशक के अन्तिम छिड़काव तथा तुड़ाई में कम से कम 7 दिनों का अन्तर अवश्य रहे, जिससे कीटनाशकों के प्रभाव को कम किया जा सके।

पपीते में उपलब्ध विटामिन 'ए' की मात्रा सारे फलों में आम के बाद दूसरे स्थान पर है। पपीते में विभिन्न प्रकार के पुष्पक्रम पाए जाते हैं। इसके पुष्पों को लिंग के आधार पर मुख्यतः नर, मादा व उभयलिंगी प्रकार में बांटा गया है। पपीते की उन्नत खेती करने के लिए अच्छे तथा स्वस्थ बीजों का प्रयोग बहुत ज़रुरी होता है।

पपीते की उन्नत प्रजातियों की वैज्ञानिक खेती

आर. एस. सेंगर व आलोक कुमार सिंह, कृषि जैव प्रौद्योगिकी विभाग, सरदार बल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ एवं डी.के. श्रीवास्तव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, लखनऊ

भूमि एवं जलवायु : पपीते की सफल बागवानी हेतु गहरी और उपजाऊ, सामान्य पी.एच. मान वाली बलुई दोमट मृदा अत्याधिक उपयुक्त मानी गई है। इसकी बागवानी के लिए भूमि में जल निकास का होना बहुत ज़रुरी

है, क्योंकि यह जल भराव के प्रति काफी सुग्राह्य है। पपीता एक उष्ण कटिबंधीय फल है, किन्तु इसकी खेती बिहार की समशीतोष्ण जलवायु में सफलतापूर्वक की जा रही है। इसकी बागवानी समुंद्र तल से 1000 मीटर की ऊंचाई तक की जा सकती है। वायुमंडल का तापमान 10 डिग्री सैल्सियस से कम होने पर पपीते की वृद्धि, फलों का लगना तथा फलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। पपीते की अच्छी वृद्धि के लिए 22 डिग्री से 26 डिग्री सैल्सियस तापमान उपयुक्त पाया गया है। इसके लिए औसत वार्षिक वर्षा 1200-1500 मिलीमीटर पर्याप्त होती है। पकने के समय शुष्क एवं गर्म मौसम होने से पपीता के फलों की मिठास बढ़ जाती है।

पपीता की उन्नत प्रजातियां : पपीता एक परम्परागत फसल है तथा इसका व्यवसायिक प्रवर्धन बीज के द्वारा होने के कारण एक ही प्रजाति में बहुत अधिक भिन्नता पाई गई है। वर्तमान में भारत में पपीते की कई किस्में विभिन्न प्रदेशों में उगाई जा रही हैं। इनमें प्रमुख रूप से 20 उन्नत किस्में हैं तथा कुछ स्थानीय व विदेशी किस्में हैं। स्थानीय किस्मों में रांची, बारवानी तथा मधु बिन्दु प्रमुख हैं। विदेशी किस्मों में वाशिंगटन, सोलो, सनराइज सोलो एवं रेड लेडी प्रमुख हैं। पपीते की कुछ प्रमुख किस्मों की संक्षिप्त जानकारी इस लेख में दी जा रही है।

पूसा मैजेस्टी : इस प्रजाति में भी पूसा डेलिशियस की भांति मादा एवं उभयलिंगी पौधे निकलते हैं। यह 50 सैंटीमीटर की ऊंचाई से फल देता है तथा एक फल का वज़न 1.0-2.5 किलोग्राम तक होता है। पूसा मैजेस्टी पैदावार में उत्तम है तथा फल में पपेन की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसके फल अधिक टिकाऊ होते है तथा इनमें विषाणु रोगों का प्रकोप कम होता है। पकने पर गुदा ठोस एवं पीले रंग का होता है तथा कुल घुलनशील ठोस 9 से 10 ब्रिक्स तक होता है। इस किस्म के एक पेड़ से 40 किलोग्राम तक फल प्राप्त होता है। इसके गुदे की मोटाई 3.5 सैंटीमीटर होती है। यह प्रजाति सूत्रकृमि अवरोधी भी है।

पूसा डेलिशियस : यह एक गायनोडायोसियस प्रजाति है। इसमें मादा और उभयलिंगी पौधे निकलते हैं तथा उभयलिंगी पौधे भी फल देते हैं। पूसा डेलिशियस 80 सैंटीमीटर की ऊंचाई तक बढ़ने पर फल देता है। इसके फल अत्यंत स्वादिष्ट एवं सुगंधित होते हैं। फलों का आकार मध्यम से लेकर साधारण बड़ा तक होता है। इनका वज़न 1-2 किलोग्राम तक होता है। इनका वज़न 1-2 किलोग्राम तक होता है। पकने पर फलों के गुदे का रंग गहरा हो जाता है तथा गुदा ठोस होता है। गुदे की मोटाई 4 सैंटीमीटर तथा कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 10 डिग्री से 13 डिग्री ब्रिक्स होती है। फलों की पैदावार 45 किलोग्राम प्रति पेड़ होती है।

पूसा ड्वार्फ : यह एक डायोसियस प्रजाति है और इसमें नर एवं मादा पौधे निकलते हैं। इस किस्म के पौधे बौने होते हैं। इसमें फलन ज़मीन से 40 सैंटीमीटर की ऊंचाई पर होता है तथा एक फल का वज़न 0.5 से 1.5 किलोग्राम तक होता है। इसकी पैदावार 40-50 किलोग्राम प्रति पेड़ है। फल के पकने पर गुदे का रंग पीला होता है। गुदे की मोटाई 3.5 सैंटीमीटर होती है तथा कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 9 ब्रिक्स होती है। पौधा बौना होने के कारण इसे आंधी या तूफान से कम नुकसान होता है।

पूसा जायंट : यह भी एक डायोसियस प्रजाति है। इस किस्म के पौधे विशालकाय होते हैं, जिनमें फलन ज़मीन से 80 सैंटीमीटर की ऊंचाई पर होता है। पूसा जायंट के फल बड़े होते हैं तथा एक फल का वज़न 1.5 से 3.5 किलोग्राम तक होता है। इसके गुदे का रंग पीला तथा मोटाई 5 सैंटीमीटर होती है। इसमें कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 7 ब्रिक्स होती है। प्रति पेड़ औसत उपज 30-35 किलोग्राम तक होती है। यह किस्म पेठा और सब्ज़ी बनाने के लिए काफी उपयुक्त है।

पूसा नन्हा : यह पपीते की सबसे बौनी प्रजाति है, जो गामा किरणों द्वारा विकसित की गई है। पूसा नन्हा भी एक डायोसियस प्रजाति है। यह 30 सैंटीमीटर की ऊंचाई से फलना प्रारंभ करता है। इसमें प्रति पेड़ 25 किलोग्राम तक फल प्राप्त होता है। इसके गुदे का रंग पीला तथा मोटाई 3 सैंटीमीटर होती है। पूसा नन्हा में कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 9 ब्रिक्स होती है। यह प्रजाति संघन बागवानी तथा गृह वाटिका के लिए काफी उपयुक्त पाई गई है।

कुर्ग हनीड्यू : यह किस्म भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरू के केन्द्रीय बागवानी प्रयोग केन्द्र, चेट्टाली द्वारा चयनित किस्म है। इसका चयन हनीड्यू नामक प्रजाति से किया गया है। यह एक गायनोडायोसियस प्रजाति है। इसके पौधे मध्यम आकार के होते हैं। कुर्ग हनीड्यू के फल लम्बे, अंडाकार आकार एवं मोटे गुदेदार होते हैं। इसके फलों का वज़न 1.5 से 2.0 किलोग्राम तक होता है। गुदे का रंग पीला होता है। इसमें कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 13.50 ब्रिक्स होती है। प्रति पौधा औसत उपज 70 किलोग्राम तक होती है।

सूर्या : यह सनराइज सोलो एवं पिंक फ्लैश स्वीट के संकरण द्वारा विकसित गायनोडायोसियस प्रजाति है। इसके फल मध्यम आकार के होते हैं और इनका औसत वज़न 600-800 ग्राम तक होता है तथा बीज की कैविटी कम होती है। फलों का गुदा गहरे लाल रंग का होता है। इसकी मोटाई 3-3.5 सैंटीमीटर तथा कुल घुलनशील ठोस मात्रा 13.5-15.0 ब्रिक्स होती है। फल की भंडारण क्षमता भी अच्छी है। प्रति पौधा औसत उपज 55-65 किलोग्राम तक होती है।

को-1 : यह प्रजाति 1972 में रांची प्रजाति से चयनित की गई है। यह एक डायोसियस किस्म है और इसके पौधे छोटे होते हैं। इसके फल मध्यम आकार के गोल होते हैं तथा गुदा पीले रंग का होता है। फलों में कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 10 से 120 ब्रिक्स तक होती हे। प्रति पौधा औसत उपज 40 किलोग्राम तक होती है।

को-2 : इस किस्म का चयन 1979 में स्थानीय किस्म से किया गया है। इसमें पपेन प्रचुर मात्रा (4 से 6 ग्राम प्रति फल) में पाई जाती है। इसके फलों का औसत वज़न 1.5 से 2.0 किलोग्राम तक होता है। फलों में 75 प्रतिशत गुदा होता है और इसकी मोटाई 3.8 सैंटीमीटर तथा रंग नारंगी होता है। फलों का आकार बड़ा होता है, जिसमें कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 11.4 से 13.50 ब्रिक्स होती है। प्रति पौधा औसत उपज 80-90 फल प्रति वर्ष होती है। पपेन की औसत उपज 250 से 300 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर होती है।

को-3 : यह को-2 एवं सनराइज सोलो के संकरण द्वारा वर्ष 1983 में विकसित गायनोडायोसियस प्रजाति है। यह ताज़े फल के रूप में खाने हेतु सर्वोत्तम किस्म है। इसके फल मध्यम आकार के होते हैं, जिनका औसत वज़न 500 से 800 ग्राम तक होता है। फल में गुदे का रंग लाल होता है। इसमें कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 14.6 ब्रिक्स तक होती है। प्रति पौधा औसत उपज 90 से 120 फल होती है।

को-4 : यह किस्म वर्ष 1983 में को-1 एवं वाशिंगटन के संकरण से विकसित की गई है। इसके पौधे के तने तथा पत्तियों के डंठल का रंग बैंगनी होता है। फल मध्यम आकार का होता है और औसत वज़न 1.2 से 1.5 किलोग्राम तक होता है। फल में गुदे का रंग पीला होता है और कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 13.2 डिग्री ब्रिक्स होती है। औसत उपज 80 से 90 फल प्रति पौधा होती है।

को-5 : इस प्रजाति का चयन वर्ष 1985 में वाशिंगटन प्रजाति से किया गया है। यह पपेन उत्पादन हेतु सर्वोत्तम पाई गई है। इसमें प्रति फल 14.45 ग्राम शुष्क पपेन पाया जाता है। पत्तियों के डंठल का रंग गुलाबी होता है। फलों का औसत वज़न 1.5 से 2.0 किलोग्राम तक होता है। फल में कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 13 डिग्री ब्रिक्स होती है। दो वर्ष के फसल-चक्र में औसत उपज 75-80 फल प्रति पौधा होती है। शुष्क पपेन की औसत उपज 1500-1600 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर होती है, जिसमें 72 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है।

क्रमशः

हरियाणा में मधुमक्खी पालन की आर्थिक स्थिरता का आंकलन

डॉ. फतेह सिंह, ज़िला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरुक्षेत्र
डॉ. वीरसैन, सहायक प्रोफैसर, कृषि अर्थशास्त्र, कौल (कैथल)
प्रवींद्र यादव, विद्यार्थी, कृषि महाविद्यालय, कौल (कैथल)

पृथ्वी पर मधुमक्खियों का इतिहास मानव के जन्म से हज़ारों वर्ष पुराना है। वृक्षों, गुफाओं व चट्टानों से शहद को एकत्रित करने का प्रमाण लगभग 7000 वर्ष ई. पू. मिलता है, जिससे पता चलता है कि मनुष्य को मधुमक्खियों व शहद के बारे में जानकारी थी। मधुमक्खी पालन मनुष्य के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूप में लाभदायक है। भारतीय उपमहाद्वीप में मधुमक्खियों को पालतू मधुमक्खी के रूप में आधुनिक लकड़ी के डिब्बों में पाला जाता है। कुछ मधुमक्खियां

पहाड़ों व जंगलों में रहती है। भारत के अतिरिक्त ये मधुमक्खियां बांग्लादेश, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, वियतनाम, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कम्बोडिया, मलेशिया, फिलीपीन्स आदि समस्त इण्डो चीन क्षेत्र में पाई जाती है।

मधुमक्खियां आपस में मिल-जुल कर कार्य करती है, जिसके कारण इनको सामाजिक कीट कहा जाता है। मधुमक्खी के पूरे परिवार में एक रानी मक्खी, हज़ारों कमेरी मधुमक्खियां तथा सैंकड़ों की संख्या में नर होते है, जिन्हें निखट्टू भी कहते हैं।

मधुमक्खियों द्वारा फूलों से एकत्रित मकरन्द से तैयार किया हुआ मीठा गाढ़ा एवं सुगन्धित पदार्थ शहद कहलाता है। मधुमक्खियां फूलों के मादा भाग से मीठा रस चूसती हैं और मौन गृह में बने मोमी छत्तों के कोष्ठों में उड़ेल देती है। उस समय मकरन्द में पानी की मात्रा लगभग 60-70 प्रतिशत तक होती है। दोपहर के समय मधुमक्खियां अपने पंखों से हवा देकर अतिरिक्त नमी को उड़ादेती हैं और जब नमी की मात्रा 16 से 20 प्रतिशत तक रह जाती है, तब उसे मोम की टोपियां द्वारा बन्द कर देती हैं। इस मीठे परिपक्व पदार्थ को शहद कहते हैं।

भारत तथ्य एवं आंकड़े : भारत ने वर्ष 2022-23 के दौरान विश्व में 79,929.17 मीट्रिक टन प्राकृतिक शहद का निर्यात 1,622. 77 करोड़ रुपए / 203.07 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कीमत पर किया।

हरियाणा प्रदेश में 2.5 लाख से अधिक मौनवंश का पालन किया जा रहा है, जिससे हमें 3000 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन मिलता है। अभी हमारे प्रदेश में 4.0 लाख अतिरिक्त मौनवंशों के पालन की क्षमता है, जिससे हमें 15000 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन मिल सकता है व 10000 लोगों के लिए 100 मानव दिन प्रति वर्ष का रोज़गार मिल सकता है।

मधुमक्खियों की उपयोगिता : मधुमक्खियां फसलों की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक, औषधीय महत्व, आध्यात्मिक महत्व और व्यवसाय के रूप में महत्व देती है।

मधुमक्खी पालन के लाभ :

*** कम लागत से अधिक लाभ कृषक व अन्य बेरोज़गार :** शहरी व ग्रामीण युवक मधुमक्खी पालन को अपना आय का स्त्रोत बना सकते है। शहद के अतिरिक्त पालक, मधुमक्खियों से अन्य उत्पाद जैसे राज अवलेह, पराग, प्रोपोलिस व मौन विष प्राप्त कर आय बढ़ा सकते है।

*** फसलों के पर-परागण से किसानों को लाभ :** मधुमक्खियां फसलों के पर-परागण का अत्यंत सरल व उत्तम साधन है, जिसमें विभिन्न फसलों की पैदावार में बढ़ोत्तरी होती है और कृषक समुदाय लाभान्वित होता है।

*** रानी मधुमक्खी का उत्पादन व उनकी बिक्री :** मधुमक्खी पालक एक वर्ष में मौनवंशों से काफी अधिक संख्या में रानी मधुमक्खियां पैदा कर सकता है व उन्हें जरूरतमंद मधुमक्खी पालकों को बेचकर धन प्राप्त कर सकता है।

*** अतिरिक्त मौन वंशों की बिक्री :** मौनवंश के उत्तम रख-रखाव से वंश वृद्धि ली जा सकती है। यदि स्वयं वंशों की संख्या बढ़ानी हो तो इन्हें बेच कर आय में वृद्धि की जा सकती है।

*** बेरोज़गारों व कारीगरों के लिए आय का स्त्रोत :** मौनगृहों, वाहकपेटिका, भूखजाली, दस्ताने, धुआंकार, मधुशोधनयंत्र, बक्सा औज़ार, रानी अवरोधक, रानी पिंजरा इत्यादि औज़ारों को बनाने वाले ग्रामीण कारीगर इसे आय का स्त्रोत बना सकते हैं। इन कार्यों के लिए बढ़ई, मोची, दर्जी, लुहार आदि को अतिरिक्त आय हो सकती है।

*** मधुमक्खी पालन में बच्चे एवं औरतों की भागीदारी :** मधुमक्खी पालन की तकनीकी बहुत ही साधारण तथा इसमें भारी बोझ वगैरा का कार्य नही है, इसलिए इस व्यवसाय को बच्चे और महिलाएं भी अपना सकती हैं और अपनी आय को बढ़ा सकती हैं।

मधुमक्खी की प्रजातियां : भारत वर्ष में मधुमक्खी की चार मुख्य प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से पहाड़ी व छोटी मधुमक्खी को पालना बहुत कठिन है। अन्य दो मधुमक्खियां भारतीय व पाश्चात्य मधुमक्खी पालतू है व मधुमक्खी पालन के योग्य है। भारतीय मधुमक्खी में वक छूट व घर छूट की प्रवृति अधिक पाई जाती है व इसमें विषाणु रोग अधिक लगता है। इस प्रजाति से शहद कम मात्रा में (8-10 किलोग्राम शहद प्रति वर्ष प्रति वंश) प्राप्त किया जा सकता है। अत: भारतीय मधुमक्खी से अधिक लाभ नहीं अर्जित किया जा सकता। पाश्चात्य अथवा इटेलियन मधुमक्खी की गुणवत्ता के कारण हरियाणा व अन्य क्षेत्रों में इसका पालन किया जा रहा है।

पाश्चात्य मधुमक्खी : मधुमक्खी की यह प्रजाति पाश्चात्य देशों से 1962 में भारत वर्ष में लाई गई थी व हरियाणा में वर्ष 1987 से इसका सफल पालन किया जा रहा है। यह प्रजाति अन्य तीन प्रजातियों से अधिक शांत व मेहनती होती है।

मधुमक्खी परिवार : प्रत्येक मधुमक्खी के जीवन में चार अवस्थाएं अण्डा, सुंडी, प्यूपा व प्रौढ़ पाई जाती है। रानी मधुमक्खी दो प्रकार के अण्डे देती है। सजीव या निषेचित अण्डों से रानी व कमेरी मधुमक्खियां उत्पन्न होती हैं। निर्जीव/अनिषेचित अण्डों में से नर उत्पन्न होते हैं। अण्डों में से तीन दिन के बाद सुंडी निकलती हैं। प्रत्येक सुंडी को कमेरी मधुमक्खियां तीन दिन तक अवलेह भोजन खिलाती हैं। इसके बाद रानी, कमेरी व नर शिशु मधुमक्खी का भोजन अलग-अलग हो जाता है। रानी शिशु को शाही अवलेह, कमेरी शिशु को शहद व पराग का मिश्रण तथा नर शिशु को शाही को डेरोन जैली खिलाई जाती है।

मधुमक्खी परिवार में तीन प्रकार के सदस्य पाए जाते है, ये सभी मिल-जुल कर कार्य करते हैं। एक मधुमक्खी परिवार/छते में एक रानी मधुमक्खी, हज़ारों कमेरी मधुमक्खियां व सैंकड़ों नर पाए जाते हैं, जिनका अपना अलग कार्य होता है।

(क) रानी मधुमक्खी : रानी आकार में सबसे लम्बी होती है व उसका धड़ भी कमेरी व नर से बड़ा होता है। यह पूर्ण रूप से मादा होती है। यह सारे परिवार की मां होती है। रानी मधुमक्खी अनुकूल परिस्थितियों में 1500-2000 अण्डे प्रति दिन तक दे सकती है। जितना अधिक पराग व मकरन्द उपलब्ध होता है, रानी उसी अनुपात में अण्डे देती है। रानी की आयु दो-तीन वर्ष की होती है।

प्रकार	अंडा	लार्वा	कोषस्थ कीट	वयस्क
रानी	3 दिन	5 दिन	9 दिन	17 दिन
श्रमिक	3	6	12	21
नर मधुमक्खी	3	7	14	24

(ख) कमेरी मधुमक्खी : यह मधुमक्खी परिवार में श्रमिक का काम करती है। यह अपूर्ण मादा होती है, जोकि अण्डे नहीं दे सकती। एक परिवार में कमेरी की संख्या 50-60 हज़ार तक हो सकती है व इनका जीवन काल 42 दिन का होता है। कभी-कभी रानी की अनुपस्थिति में या रानी बूढ़ी होने पर कमेरी मधुमक्खी निर्जीव अण्डे देने का काम करती है, जिनसे केवल नर ही उत्पन्न होते है। कमेरी मधुमक्खियां विभिन्न कार्य करती है व इनके कार्य का विभाजन आयु के आधार पर होता है।

आयु (दिन)	कार्य
1-2	मोमी छतों की सफाई व कोष्ठों की पालिश
3-6	शिशुओं को भोजन खिलाना
7-12	रानी को व 1-3 दिन के शिशुओं को भोजन खिलाना।
13-18	मोमी छतों को बनाना, मकरन्द को पराग में बदलना।
19-20	मौन गृह की सफाई व शत्रुओं से रक्षा, मौन गृह को पंखों से हवा देकर तापमान व नमी अनुकूल रखना।
20-21	उड़ान का अभ्यास व घर की पहचान।
21	दिन के पराग, मकरन्द, पानी के स्त्रोत को ढूंढना व छते में बाद आवश्यकतानुसार लाना।

(ग) नर मधुमक्खी : नर मधुमक्खी आकार में रानी से छोटी व कमेरी मधुमक्खी से बड़ी होती है। सामान्यता एक कालोनी में नर की संख्या 50 तक मिलती है। इनको निखट्टू भी कहा जाता है, क्योंकि ये परिवार के कोई भी कार्य नहीं कर सकते। ये रानी द्वारा दिए गए निर्जीव अण्डों में से पैदा होते हैं व 22-24 दिन में जवान हो जाते हैं।

मधुमक्खी पालन का सही समय : अक्तूबर-नवम्बर माह हरियाणा में मधुमक्खी-पालन शुरू करने का सबसे उचित समय है। इस समय में मौनचर/फूल अधिक संख्या में मिलते है। फरवरी-मार्च तक फूलों की बहुतायत बनी रहती है, जिसके कारण मधुमक्खी पालक को शहद भरपूर मात्रा में मिलता है तथा मधुमक्खियों की संख्या में भी वृद्धि होती है। पांच से दस बक्सों से मधुमक्खी पालन शुरू कर बक्सों की संख्या बढ़ा सकते है।

मधुमक्खी पालन कहां करें? : मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए उस स्थान का चुनाव करें, जहां मौनचरों की अधिकता हो। यह व्यवसाय उन क्षेत्रों में शुरू करना चाहिए, जहां नीचे दिए गए मौनचर अधिक मात्रा में मिले।

* सरसों जाति की फसलें जैसे सरसों, तोरिया, राया, तारामीरा आदि।

* बीज के लिए चारे वाली फसलें जैसे बरसीम, रिजका, मक्का, मकचरी, बाजरा आदि।

* दलहनी फसलें जैसे चना, अरहर, मूंग, ज्वार आदि।

* सूरजमुखी, कपास।

* बेल वाली सब्ज़ियां जैसे घीया, तोरी, टिण्डा, ककड़ी आदि।

* अन्य सब्ज़ियां जैसे गाजर, मूली, धनिया, सौंफ।

मधुमक्खी वंशों को खरीदना : मधुमक्खी वंश सदैव विश्वसनीय मधुमक्खी पालक से ही खरीदें। भूरे रंग के उदर की युवा रानी मक्खी की खरीद करें। अधिक उम्र की रानी का उदर गहरा भूरा या काला फीका होता है। मधुमक्खी खरीदते समय तीन शिशु चौखट (कमेरी सहित) तथा एक मकरन्द व पराग की चौखट अवश्य खरीदें। नर मधुमक्खियों की संख्या कम होनी चाहिए। सायं: काल के समय बक्सों व प्रवेश द्वार को अच्छी तरह बन्द कर दें, ताकि मधुमक्खियां बाहर न निकल सकें।

वंशों को ले जाना : खरीदी हुई मधुमक्खियों को रात के समय ही ले जाना चाहिए। बक्से के अन्दर 10 चौखट रख कर कील से बन्द कर देना चाहिए। गर्मी में प्रवेश द्वार पर जाली व सर्दी में प्रवेश द्वार को लकड़ी की फट्टी से बन्द कर देना चाहिए। वाहन में ले जाते समय सावधानी रखें कि बक्से अधिक न उछलें।

शेष पृष्ठ 8 पर

शेष पृष्ठ 7 की

हरियाणा में मधुमक्खी पालन की...

बक्सों को रखना : मधुमक्खियों के बक्सों को उचित स्थान पर रात में ही इस प्रकार रखें कि दो बक्सों में लगभग 5 फुट की दूरी रहे। सबसे पहले मधुमक्खियों के प्रवेश द्वार को खोल दें ताकि मधुमक्खियां अपना कार्य शुरू कर दें। दूसरे दिन बक्सों

को खोल कर रानी व कमेरी मधुमक्खियों का निरीक्षण करें व कमी होने पर उसे पूरी करें।

बक्सों को रखना : मधुमक्खियों के बक्सों को उचित स्थान पर रात में ही इस प्रकार रखें कि दो बक्सों में लगभग 5 फुट की दूरी रहे। सबसे पहले मधुमक्खियों के प्रवेश द्वार को खोल दें ताकि मधुमक्खियां अपना कार्य शुरू कर दें। दूसरे दिन बक्सों को खोल कर रानी व कमेरी मधुमक्खियों का निरीक्षण करें व कमी होने पर उसे पूरी करें।

मौनालय की स्थापना : मौनालय की स्थापना ऐसे स्थान पर करनी चाहिए, जहां से मौनवंशों को जल्दी हटाने की आवश्यकता न पड़े। मधुमक्खियां एक विशेष प्रकार की गन्ध छोड़ कर अपना रास्ता बना लेती हैं। वंशों को थोड़े समय बाद कुछ दूरी पर ले जाने से कमेरी मधुमक्खियां रास्ता भटक जाती हैं। इसलिए जिस स्थान पर वंशों को एक बार रख दिया जाता है, वहां से उन्हें आसानी से हटाया नहीं जा सकता। यदि स्थान बदलने की आवश्यकता पड़े तो सायंकाल के समय लगभग दो फुट खिसका कर कुछ दिनों में निर्धारित स्थान पर रखा जा सकता है।

मौन वंशों के स्थान के सामने वृक्ष झाड़ी या कोई अन्य रुकावट नहीं होनी चाहिए ताकि मधुमक्खियों के आने-जाने में कोई बाधा न पड़े। मौनालय के पास चींटियां मकोड़ों के बिल नहीं होने चाहिए, क्योंकि बरसात के मौसम में ये मधुमक्खियां वंशों को हानि पहुंचाते हैं।

मधुमक्खी वंशों की देखभाल : मधुमक्खी परिवारों का उचित प्रबन्ध करना एक

महत्वपूर्ण कार्य है। बदलती ऋतुओं व मौसम के अनुसार इनकी देखभाल कर मधुमक्खी परिवारों को व शहद उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

गर्मियों में देखभाल : मई, जून महीनों में जब तापमान 45 से 47 डिग्री सैल्सियस तक पहुंच जाता है व वर्षा का अभाव रहता है, तब मकरन्द व पराग की कमी हो जाती है। इस समय नीचे दी गई बातों पर विशेष ध्यान दें :

* बक्सों पर पानी में भीगी बोरियां रख कर कॉलोनी सुरक्षित रखें।

* कॉलोनी के नजदीक पानी का प्रबंध रखें।

* कॉलोनियां छायादार स्थान पर वृक्षों के नीचे रखें।

* जरूरत पड़ने पर कृत्रिम भोजन जैसे चाश्नी, पराग आदि दें।

वर्षा ऋतु में देखभाल :

* तेज़ बौछारों से बक्सों का बचाव रखें।

* बक्सों को ऊंचे स्थान पर रखें ताकि उनमें पानी न भरे।

* बरसात के मौसम में बक्सों के अन्दर हवा का संचार सुनिश्चित करें।

* चींटियों से बचाव के लिए पानी की प्यालियों का प्रयोग करें।

शरदकालीन देखभाल :

* कमज़ोर वंशों का मेल (यदि पहले न किया हो) कर देना चाहिए, अन्यथा ऐसे वंश समाप्त हो जाते हैं।

* वंशों को रोग रहित रखें।

* आवश्यकता हो तो पुरानी रानी को बदल दें।

शीतकालीन देखभाल :

* बक्सों के प्रवेश द्वार हवा की दिशा में नहीं होने चाहिए।

* तेज़ हवाओं से कॉलोनी का बचाव रखें।

* तेज़ सर्दी से बचाव के लिए धान की पुआल / घास के तिनकों / पुराने ऊनी कपड़ों के टुकड़ों आदि की तरह अन्तर पट्ट के ऊपर व आधार पट्ट के नीचे रखें।

* सुपर का प्रयोग करें व रानी को शहद कक्ष में न जाने दें।

बसन्त ऋतु में देखभाल :

* बक्सों को अधिक देर तक खुला न छोड़ें क्योंकि इस समय लूट मार हो सकती है।

* आवश्यकता अनुसार वंश में छते देते रहें।

शहद निष्कासन : शहद निकालने के समय यह बहुत जरूरी है कि शहद केवल उन्हीं चौखटों से निकालें, जिनका तीन-चौथाई भाग बन्द हो। शेष शहद बिल्कुल न निकालें, क्योंकि यह कच्चा होता है और इसमें नमी की मात्रा अधिक होने के कारण खमीर बनने का खतरा रहता है, जिससे शहद में खट्टापन आ जाता है। किसी मुलायम ब्रश की सहायता से मधुमक्खियां छते पर से हटा दें। छतों को खाली बक्से में रखें व कमरे में ले जाएं। छतों पर से मोमी टोपियां उतार कर छते मधु निष्कासन यंत्र में रख दें व 1-2 मिनट के लिए मध्यम गति से लगातार घुमाएं। फिर छतों को दूसरी तरफ बदल कर इस क्रिया को दोहरायें। शहद को टंकी में 48 घंटों तक रखा रहने दें ताकि मोम आदि ऊपर आ जाए व ऐसी वस्तुओं को निकाल दें।

मधुमक्खी पालन का आर्थिक विश्लेषण

विवरण	दर (रुपए)	मौनालय आकार	लागत (रु.) (50 बॉक्स)
अनावर्ती व्यय (एक बार का खर्च)			
1. लकड़ी की मौनपेटिका	800	50	40000
2. पांच चौखटों का वंश	1500	50	75000
3. छताधार	10	900	9000
4. लोहे का स्टैण्ड	80	50	4000
5. मधु निष्कासन यंत्र (4-6 फ्रेम)	5000	1	5000
6. नकाब, औजार आदि	1000	50	1000
7. भण्डारण के लिए बाल्टी	120	50	6000
	योग		1,40,000
आवर्ती व्यय (वार्षिक खर्च)			
1. मजदूरी (20 दिन)	300	50	15000
2. चीनी (2.5 कि.ग्रा./वंश)	40	125	5000
3. दवाईयां	200	50	10000
4. कपड़ा			500
5. पैकिंग	20	50	1000
6. कॉलोनी को ले जाना	20	50	1000
	योग		51,500
आय			
1. शहद (35 कि.ग्रा./वंश)	80	50	140000
2. वंश की बिक्री (5 चौखट)	1500	50	75000
	योग		2,15,000
कुल			
1. आवर्ती व्यय			51500
2. ब्याज			16000
3. मूल्य में गिरावट			14000
	योग		81500
वार्षिक लाभ (ग-घ)			1,43,500

शेष पृष्ठ 3 की

गेहूं की फसल में बीजोपचार और खरपतवार नियंत्रण के वैज्ञानिक तरीके

ख) संकरी पत्ती वाले या घास जाति के खरपतवार : जिन खेतों में जंगली जई व कनकी (गुल्ली डंडा) का अधिक प्रकोप हो वहां यांत्रिक विधि द्वारा खरपतवार नियन्त्रण कारगर नही है क्योंकि ये खरपतवार गेहूं के पौधों से मिलते जुलते है इसलिये रसायनों द्वारा ही इनका नियन्त्रण करना चाहिये।

जिन क्षेत्रों में कनकी में आइसोप्रोटूरॉन के विरुद्ध प्रतिरोधकता नही आई है वहां कनकी तथा जंगली जई की रोकथाम के लिये मेथाबेजंथायजुरान 70 प्रतिशत घु.पा. 800 ग्राम या मेटाजुरान 80 प्रतिशत घु.पा. 800 ग्राम या आइसोप्रोटूरॉन 75 प्रतिशत घु.पा. 500 ग्राम का प्रति एकड़ बुवाई के 30-35 दिन बाद 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

धान-गेहूं फसल चक्र वाले क्षेत्रों में जहां कनकी में आइसोप्रोटूरॉन के प्रति प्रतिरोधकता आ गई है। वहां कनकी व जंगली जई की रोकथाम के लिये पीनाक्साडैन 5 प्रतिशत ई.सी. 100 मिलीलीटर या क्लोडोनीफॉप 15 प्रतिशत घु.पा. 160 ग्राम या सल्फोसल्फयुरान 75 प्रतिशत घु.पा. 13 ग्राम + 500 मिलीलीटर सहायक पर्दाथ या फीनोक्साप्रोप 400 ग्राम + 200 ग्राम सहायक पर्दाथ या ट्रैलकोक्सीडीन 10 प्रतिशत ई.सी. 1400 मिलीलीटर प्रति एकड़ बिजाई के 30-35 दिन बाद 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

ग) मिश्रित (चौड़ी व संकरी पत्ती) खरपतवार :- गेहूं में मिले जुले खरपतवारों के नियन्त्रण विशेषकर बिना आईसोप्रोटूरॉन प्रतिरोधकता क्षेत्रों में आइसोप्रोटूरॉन 75 प्रतिशत घु.पा. 300 ग्राम 2,4-डी एस्टर 100 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से बुवाई के 30-35 दिन बाद 250 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

कनकी प्रतिरोधकता क्षेत्रों में मिश्रित खरपतवारों में नियन्त्रण के लिये पीनोक्साडैन या क्लोडीनफोप या फीनोक्साप्रोप की उपरोक्त मात्रा का बिजाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करे तथा इसके एक सप्ताह बाद 2,4-डी या मैटसल्फयूरान 8 ग्राम मात्रा का पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

मिले-जुले खरपतवारों का आइसोप्रोटूरॉन प्रतिरोधकता वाले क्षेत्रों में टोटल (सल्फोसल्फयूरान, मैटसल्फसूरान) का 16 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बुवाई के 30-35 दिन बाद 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। इन खेतों में मक्का, ज्वार आदि का फसल न लें।

मिश्रित खरपतवारों का विशेषकर आइसोप्रोटूरॉन प्रतिरोधकता वाले क्षेत्रों में नियंत्रण हेतु एटलांटिस (मिजोसल्फयूरान ओयडो-सल्फयूरान) 160 ग्राम प्रति एकड़ को 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ऐसे खेतों में भी ज्वार व मक्का की फसल न उगाएं।

मिश्रित खरपतवारों का विशेषकर एटलांटिस या क्लोडीनफोप या फीनोक्साप्रोप आदि प्रतिरोधकता वाले क्षेत्रों में नियन्त्रण के लिए पेंडीमेथलीन 30 ई.सी. की 2 लीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में मिला कर बुवाई के तुरंत बाद प्रति एकड़ छिड़काव करें या परोक्सासेलफोन (जिदुआ या मोमीजी) 60 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के तुरंत बाद प्रति एकड़ छिड़काव करें।

मटर में कीट प्रबंधन

डॉ. देवी दयाल नारंग, कृषि विशेषज्ञ (सेवा–निवृत),
पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (मो.94647–20231)

मटर दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसका प्रयोग सब्ज़ी के रूप में मुख्य रूप से किया जाता है। मटर में प्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक होती है। यह खनिज पदार्थों तथा विटामिनों से भरपूर है। मटर की फसल में बहुत सारे हानिकारक कीट हमला करते हैं, जिससे कई बार मटर की फसल तबाह हो जाती है। इन कीटों की पहचान तथा रोकथाम कैसे की जा सकती है, इस लेख में दिया जा रहा है। किसान भाई इससे लाभ उठा कर मटर की अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

इन मुख्य कीटों का प्रबंधन कैसे करना है। इसकी विस्तारपूर्वक जानकारी निम्नलिखित है :

1. तना मक्खी : यह छोटी एवं काले रंग की मक्खी होती है। इस कीट का मादा कोमल होता है, जोकि तनों एवं शाखाओं में छेद करके उसमें अण्डे देती है। 2 से 4 दिनों के बाद अण्डे से सुण्डी (लारवा) निकलते हैं, जो सुरंग बना कर मध्य शिराओं से होते हुए तने में प्रवेश कर जाते हैं। तना मक्खी की मैगट (लारवा) की अवस्था बहुत खतरनाक होती है। ये तने की कोशिकाओं को खा कर नष्ट कर देती है, जिससे तना सूखने लगता है और अंत में पूरा पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण उपाय :

1. सड़ी जैविक खाद का प्रयोग करें।
2. प्रभावित पौधों को नष्ट कर दें।
3. गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए।
4. इसकी बुवाई अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में करें।

जैविक नियंत्रण :

1. नीम के बीज का घोल 5 प्रतिशत बना कर प्रयोग करें। नीम आधारित कीटनाशी का प्रयोग करें।
2. मित्र कीटों जैसे मकड़ी का संरक्षण प्रदान करें।

रासायनिक नियंत्रण :

1. मोनोक्रोटोफॉस दवा का 0.2 प्रतिशत का घोल बना कर 15 दिनों के बाद लगातार खड़ी फसल पर स्प्रे करें।
2. यदि उपरोक्त दवाई ना मिले तो 0.05 प्रतिशत मिथाइल पाइरीथियान का छिड़काव करने से इस कीट की रोकथाम आसानी से की जा सकती है।

2. माहू (चेपा/एफिड) : ये हल्के रंग के छोटे-छोटे कीट होते हैं। नम मौसम में इनकी संख्या अधिक बढ़ती है। इस कीट के लार्वा व प्रौढ़ दोनों कोमल तथा उगते हुए भागों पर आक्रमण करते हैं, फिर फलियों पर हमला करते हैं और रस चूसते हैं। अधिक प्रकोप होने पर प्रभावित भाग सूख जाते हैं और फलियां भी नहीं बनती हैं। माहू का आक्रमण जनवरी के बाद होता है।

नियंत्रण :

1. माहू का प्रकोप होने पर 0.25 प्रतिशत मैटासिस्टॉक्स का घोल छिड़कें। 15-20 दिनों के अंतराल पर दोहरायें।
2. बवेरिया बेसियाना 2-4 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से 400-500 लीटर पानी में घोल कर स्प्रे करें।

3. फली छेदक : इस कीट की सुंडियां हरे रंग की होती हैं। फली छेदक की हानिकारक अवस्था सुंडी होती है, जो हल्के हरे रंग की 3 से 5 सैंटीमीटर लम्बी होती है तथा शरीर के ऊपरी भाग पर भूरे रंग की धारियां पाई जाती हैं। यह पहले पत्तियों को खाती हैं। फलियों की अवस्था में यह कली तथा फलियों में छेद करके नुकसान पहुंचाती है। फलियों को खाते समय प्राय: इसका सिर इसके अंदर की तरफ तथा शरीर का भाग बाहर की तरफ लटका रहता है। एक सुंडी 30-40 फलियों को नुकसान पहुंचाती है।

नियंत्रण :

1. बुवाई समय से करें।
2. ज्यादा सिंचित फसल अत्याधिक प्रभावित होती है।
3. 2-3 वर्ष के अंतराल पर गर्मियों में खेत की जुताई अवश्य करें ताकि इस कीट के कैप्सूल अवस्था अथवा सुंडियां धूप लगने से मर जायेंगी।
4. प्रकाश प्रपंच लगा कर वयस्क कीटों को नष्ट करें।
5. प्रभावित फलियों को तोड़ कर नष्ट करें।
6. पक्षियों के बैठने के लिए प्रति हैक्टेयर 50-60 टहनियां लगाएं ताकि वह सुंडियों को खा कर साथ-साथ समाप्त कर दें।

जैविक नियंत्रण :

* जैविक कीटनाशियों का प्रयोग भी कर सकते हैं।
* 7-8 ट्राइको कार्ड प्रति हैक्टेयर प्रति सप्ताह 4 बार लगाएं।

रासायनिक नियंत्रण :

* क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. की 1.5 लीटर मात्रा या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. की 2 लीटर मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोल बना कर स्प्रे करें।

विशेष नोट : बुवाई के समय सूत्रकृमि परजीवी के बारे मूल ग्रंथि सूत्रकृमि (Nematodes) के प्रकोप से पौधों की जड़ों में गांठें बन जाती हैं। इससे पौधे पीले पड़ जाते हैं तथा उनकी बढ़वार रुक जाती है। इसके नियंत्रण के लिए बुवाई से पूर्व 25 किलोग्राम कार्बोफ्यूरॉन 3जी प्रति हैक्टेयर भूमि में मिलाएं और फसल चक्र अपनाएं।

सर्दी में मेथी का सेवन कई परेशानियों से दिलाता है निजात

सर्दी का मौसम शुरू होते ही बाज़ार में हरी–भरी पत्तेदार सब्ज़ियों की बहार आ जाती है। इनमें एक हरी सब्ज़ी मेथी भी है, जो अपने सेहत भरे गुणों के कारण बेहद लाभदायक होती है। ज्यादातर लोगों को पेट संबंधी समस्याएं परेशान करती हैं, जिनमें कब्ज़ और गैस भी शामिल है। मेथी की हरी सब्ज़ी को खाने से आपका पाचन तंत्र सुचारू रूप से कार्य करता है और कब्ज़ व गैस की समस्या से आपको निजात मिलती है।

जोड़ों के दर्द से मिलती है राहत

घर के बड़े बुजुर्गों को आपने सर्दियों में मेथी और मेवे के लड्डू खाते ज़रुर देखा होगा। इसका प्रमुख कारण है कि मेथी का सेवन आपको जोड़ों के दर्द से भी मुक्ति दिलाता है। इसके बीज हों या फिर पत्तियां, दोनों ही जोड़ों के दर्द में समान रूप से फायदेमंद हैं। बता दें कि मेथी की पत्तियां आपके बालों के लिए भी बहुत लाभकारी हैं। इसकी पत्तियां पीस कर बालों में लगाने से बाल काले, घने व चमकदार होते हैं। साथ ही बालों का झड़ना भी रुक जाता है।

पेट के कीड़ों के लिए भी सटीक इलाज

पेट में कीड़े होने पर भी मेथी आपके लिए एक सटीक उपचार है। अधिकांश बच्चों में यह समस्या होती है। ऐसे में मेथी की पत्तियों का रस निकाल कर बच्चे को एक चम्मच प्रति दिन पिलाने पर कृमि समाप्त हो जाते हैं। मेथी आपको सर्दी लगने से भी बचाती है। इसका प्रति दिन किसी ना किसी रूप में सेवन करने से सर्दी से बचाव रहता है और आप इस मौसम की आम स्वास्थ्य समस्याओं से बच जाते हैं।

मधुमेह के मरीजों के लिए मेथी का सेवन अत्याधिक फायदेमंद होता है। अगर आप चाहें तो प्रति दिन मेथी की पत्तियों का रस निकाल कर पिएं, इससे बढ़ी हुई शर्करा नियंत्रण में हो जाएगी।

त्वचा की खूबसूरती बढ़ाने में कारगर

चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने में भी यह मेथी कुछ कम गुणवान नहीं है। इसे पीस कर चेहरे पर लगाने से त्वचा में चमक के साथ कसाव आता है। इसके अलावा रुखी त्वचा वालों के लिए यह बहुत लाभप्रद है, क्योंकि यह त्वचा को नमी प्रदान करती है।

मेथी की हरी पत्तियों की सब्ज़ी में प्याज़ डाल कर खाना आपको रक्तचाप की समस्या से छुटकारा दिलाने में मदद करेगा। निम्न रक्तचाप वालों के लिए मेथी की मसाले वाल सब्ज़ी बहुत लाभकारी होती है। खास तौर से अदरक व गर्म मसाला इसमें लाभ देता है।

दिल की बीमारियों को भी दूर रखने में मदद

मेथी की सब्ज़ी का नित्य सेवन करना, दिल की बीमारियों को भी दूर रखने में मदद करता है। यह दिल का दौरा पड़ने की संभावना को बेहद कम कर देता है और आप अपने हृदय को बिल्कुल स्वस्थ रख सकते हैं। मेथी की सब्ज़ी का प्रति दिन सेवन या फिर मेथी दाने का चूर्ण प्रति दिन खाने से आपका वज़न नियंत्रित रहता है और वसा की मात्रा धीरे-धीरे कम हो जाती है। इस तरह से आप अपना वज़न भी कम कर सकते हैं।

सर्दियों में कैसे रखें पालतू पशुओं की त्वचा की देखभाल

पशुओं में त्वचा रोगों में खुजली, बैक्टीरिया और फंगल संक्रमण, अल्सर, पैरों में खारिश, दाद, एक्जिमा, त्वचा का फटना, चीचड़, घुन, जूं और कीटों का संक्रमण शामिल है। सर्दियों के मौसम की पहली ठंड के कुछ ही समय बाद, त्वचा सूखी व खुजली वाली हो जाती है। यह सबसे अधिक संभावना है कि आपके कुत्ते को सर्दियों में खुजली होती है, क्योंकि उनकी त्वचा शुष्क, ठंडी हवा में शुष्क होती है। आपका कुत्ता अक्सर सर्दियों के महीनों में खुजली क्यों करता है और आप उसकी परेशानी को कैसे कम कर सकते हैं, जानने के लिए यह लेख पढ़ें।

कुत्तों में शुष्क त्वचा के कारण

सर्दी घर के बाहर और अंदर शुष्क हवा लाती है, जो त्वचा के लिए अत्याधिक शुष्क होती है। बाहर, ठंडी हवा गर्म हवा की तुलना में कम नमी रखती है। शुष्क त्वचा तब और बढ़ जाती है, जब हवा ठंडी

हवा के झोंकों से चलती है या तापमान ठंडा होता है। कुछ कुत्ते इनडोर एलर्जी के प्रति संवेदनशील होते हैं, जैसे कि धूल के कण और मोल्ड, उनमें ज्यादा त्वचा रोग की समस्या होती है। ध्यान रखें कि शुष्क त्वचा अन्य रोग को भी बढ़ावा दे सकते हैं, जोकि सर्दियों से संबंधित नहीं है, जिनमें फंगल संक्रमण, जीवाणु संक्रमण, परजीवी, दवाओं के प्रति प्रतिक्रिया, हाइपो- थायरायडिज्म और आटोइम्यून रोग शामिल हैं। सर्दियों में उनका बहुत ध्यान रखना चाहिए। यदि आपका कुत्ता अत्याधिक खुजली कर रहा है, तो उसे पशु चिकित्सक के पास ले जाएं।

कुत्तों में सूखी त्वचा को रोकने के लिए सुझाव

सर्दियों में अपने कुत्ते की शुष्क त्वचा का इलाज करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें पहले ही शुष्क त्वचा से बचाया जाए। यहां तक कि अगर उनकी पहले से ही सूखी त्वचा है, तो आप इन बातों का ध्यान रख सकते हैं :

* अपने कुत्ते को हाइड्रेटेड रखें। अपने घर के भीतर एक आर्द्र वातावरण प्रदान करें। पानी शरीर के माध्यम से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। जब कुत्ता पानी पीता है, तो वह किडनी के माध्यम से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। पानी कुत्ते के शरीर के तापमान को भी नियंत्रित करता है। इसलिए सुनिश्चित करें कि उन्हें सर्दियों में पर्याप्त पानी मिल रहा है। यदि आपको नहीं लगता कि वे पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं ले रहे हैं, तो उनके खाने को तरल खाना देना चाहिए।

* अपने कुत्ते के स्नान दिनचर्या पर विचार करें। नहाना कम करें। गर्म पानी के बजाय गुनगुना पानी अच्छे से साफ करता है और त्वचा को शुष्क नहीं करता है। आपको अपने कुत्ते को महीने में एक बार ही नहलाना चाहिए।

उन्हें जल्दी नहलाने से त्वचा के प्राकृतिक तेल निकल जाते हैं, जो उसकी त्वचा को शुष्क हवा और कठोर सर्दियों की हवाओं से बचाते हैं और मॉइस्चराइज करते हैं। एलोवेरा का भी स्नान के लिए प्रयोग कर सकते हैं, जिससे त्वचा में सूखापन नहीं रहता। स्नान के बाद यह महत्वपूर्ण है कि ठंड के मौसम में बाहर जाने से पहले वह पूरी तरह से सूखा हो।

* कुछ ठंड के मौसम में कुत्तों की नस्लों में मोटे, डबल कोट होते हैं, जो सर्दी में प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। सर्दियों में उन्हें जैकेट पहनानी चाहिए, जोकि त्वचा और ठंडी हवा के बीच एक बफर प्रदान करते हैं। बस सुनिश्चित करें कि यह एक उचित फिटिंग वाला हो, जो ठंडी हवा से बचाव करे।

* अपने कुत्ते के बालों को रोज़ाना ब्रश करें। यदि आपके कुत्ते की त्वचा सर्दियों में शुष्क होने की संभावना है, तो रोज़ाना ब्रश करने से मदद मिलेगी। ब्रश करने से त्वचा में खून का संचार बढ़ता है, जो त्वचा के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। यह आपके कुत्ते के बालों में प्राकृतिक तेलों को वितरित करने में भी मदद करता है।

* एक आर्द्र वातावरण प्रदान करें। आप बाहर की नमी को नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन आप अपने घर के अंदर की नमी को बढ़ा सकते हैं। उन कमरों में ह्यूमिडिफायर चलाने पर विचार करें, जहां आपका कुत्ता अपना अधिकांश समय बिताता है। यह सर्दियों की हवा और आपके घर के हीटिंग सिस्टम के कारण होने वाले सूखेपन का प्रतिकार करेगा।

* हमें कुत्तों के खाने की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। उनके खाने में प्रचुर मात्रा में विटामिन, मिनरल्स व फैटी एसिड्स होने चाहिए। यदि आपका कुत्ता हर सर्दियों में शुष्क त्वचा से पीड़ित होता है, तो पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें। कई कुत्ते के खाद्य पदार्थों में कुछ ओमेगा 3 और ओमेगा 6 फैटी एसिड होते हैं, लेकिन यह संभव है कि उन्हें उनकी उम्र व नस्ल के अनुसार मात्रा चाहिए।

बैंगन के कीटों का विवरण व उनका प्रबंधन

बैंगन एक महत्वपूर्ण सब्जी है। यह भारत में ही पैदा हुआ और आज आलू के बाद दूसरी सबसे अधिक खपत होने वाली सब्जी है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिये बहुत मायने रखता है। पोषण की दृष्टि से देखें तो बैंगन में खनिज लवण व विटामिन अच्छी मात्रा में पाये जाते है। दिखने में ठोस होने के बावजूद बैंगन में जलांश 92 प्रतिशत होता है। खनिज लवणों में कैल्शियम, फास्फोरस, लौह-तत्व, पोटोशियम व मैगनीज बैंगन में उपस्थित रहते है। कुछ मात्रा में विटामिन 'ए' व 'बी' कॉम्पलेक्स भी पाए जाते है, लेकिन इसके सफल उत्पादन में कई प्रकार की अड़चनें जैसे कीट व बीमारियों आदि आड़े आ जाती है। कीट फल की गुणवत्ता को कम कर देते है। इसलिए यदि समय पर इन कीटों को नियंत्रित किया जाये तो नुक्सान को काफी कम किया जा सकता है। बैंगन में लगने वाले कीटों का विवरण व प्रबंधन नीचे बताया गया है।

1. हरा तेला (Leafhopper) :- इस कीट के शिशु व प्रौढ़ हरे रंग के होते है। ये कोमल पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते है। जिससे पत्तियां मुड़ जाती हैं, पीली हो जाती है और अंत में किनारों से सूख जाती है।

रोकथाम :- कीट के फसल पर दिखाई देने पर 300-400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 200-250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 दिन के अंतर पर छिड़कें।

* जब फसल लगनी शुरू हो जाए तो बारी-बारी से सिंथेटिक पाइरेथ्राईड (80 मि.ली. फैनवलरेट 20 ई.सी. 1200 मि.ली. डेल्टामैथ्रीन 2.8 ई.सी.) रोपाई के 35-40 दिन के बाद 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ फसल पर छिड़कें।

2. सफेद मक्खी (White-fly) :- यह पीले रंग के कीट होते है। जिनका शरीर सफेद रंग का पाऊडर का होता है। शिशु व प्रौढ़ दोनों ही फसल को नुक्सान पहुंचाते है। ये पत्तों की निचली सतह से रस चूसते है। जिससे पत्ते पीले पड़ जाते है। पौधे कमजोर हो जाते है। यह कीट मरोड़िया रोग भी फैलाता है।

रोकथाम :- 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 200-250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 दिन के अन्तराल पर छिड़कें।

3. हड्डा भुंडी :- सुंडी व प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों से हरे पदार्थ को खाते है। यह भुंडी अर्धवृत आकार की होती है और तांबे रंग होता है। इसके पंखों पर काले रंग के धब्बे होते है। सुंडियां पीले रंग की और कांटेदार होती है।

रोकथाम :- 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 200-250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 दिन के अन्तराल पर छिड़कें।

4. तना व फल छेदक भुंडी :- फसल में नुक्सान सुंडी के द्वारा किया जाता है, जो कि गुलाबी रंग की होती है। व्यस्क सफेद रंग का होता है। जिस पर पीले भूरे या काले रंग के धब्बे पाए जाते है। सुंडी फल आने से पहले नई शाखाओं में छिद्र करके प्रवेश कर जाती है। जिसके कारण शाखाएं मुरझा जाती है और सूख जाती है तथा पौधे की बढ़वार भी रूक जाती है। जब फल लगते है तो सुंडियां फलों के अन्दर घुसकर उन्हें काना कर देती है। नुक्सान मई से अक्तूबर तक ज्यादा होता है।

रोकथाम :- 75 ग्राम स्पाईनोसैड 46 एस.सी. को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर तीन छिड़काव करें।

5. लाल अष्टपदी (Red mite) :- पीले व लाल रंग के शिशु व प्रौढ़ पत्तों की निचली सतह पर जाला बनाकर रहते है। ये पत्तों से रस चूसते है। इसकी वजह से पत्तों पर सफेद रंग के धब्बे बन जाते है। शुष्क मौसम में नुक्सान ज्यादा होता है।

रोकथाम :- 300 मि.ली. प्रैम्पट 20 ई.सी. (फैन परोपैथ्रिन 15 प्रतिशत + पाईरिपरोक्सीफेन 50 प्रतिशत) को 200 लीटर पानी में मिलाकर फूल आने से पहले प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें और 10-12 दिन के अन्तर पर 2-3 बार दोबारा छिड़काव करें।

* जिन शाखाओं पर या फलों पर कीटों का आक्रमण हो चुका हो तो उन्हें तोड़ लें और जला दें या फिर मिट्टी में गहरा गड्डा खोदकर दबा दें।

* जब भी कीटनाशक का छिड़काव करना हों, उससे पहले फलों को तोड़ लेना चाहिए।

पंजाब देश में गन्ने का सबसे अधिक भाव देने के मामले में अग्रणी

पंजाब के मुख्यमंत्री की ओर से गन्ने का भाव बढ़ाकर 416 रुपए प्रति क्विंटल करने की घोषणा

*** दीनानगर में नई शुगर मिल और को-जनरेशन प्लांट का उद्घाटन किया * राज्य सरकार की ओर से तैयार की जा रही सल्फर रहित 'फतेह' चीनी लॉन्च की**

देश भर में गन्ना किसानों को सबसे अधिक भाव देने की परंपरा को बरकरार रखते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आगामी पिड़ाई सीजन के लिए गन्ने का भाव बढ़ाकर 416 रुपए प्रति क्विंटल करने की घोषणा की है, जो पूरे राज्य के किसानों के हितों की रक्षा के प्रति राज्य सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दीनानगर में नई शुगर मिल और को-जनरेशन प्लांट का उद्घाटन करने के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाब गन्ने का सबसे अधिक भाव देने वाला देश का पहला राज्य बन गया है, जिसने राष्ट्रीय स्तर पर एक नया मानक स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार द्वारा राज्य के किसानों को देश भर में सबसे अधिक भाव देने से किसानों को बड़ा लाभ होगा। भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब हमेशा से अपने किसानों को देश में गन्ने का सबसे अधिक भाव देता रहा है और उनकी सरकार ने इसे कायम रखा है।

मुख्यमंत्री ने उम्मीद जताई कि इस किसान-हितैषी पहल से किसानों, खासकर सीमावर्ती जिलों के किसानों को, जहां गन्ना मुख्य फसल है, बहुत बड़ा फायदा होगा। भगवंत सिंह मान ने आगे कहा कि गन्ना फसल विविधीकरण का आधार है, जो राज्य के फसल विविधीकरण प्रयासों को और मजबूत कर सकता है। उन्होंने केंद्र सरकार से अपील की कि वह गन्ने को पानी की अधिक खपत वाली फसलों का व्यावहारिक विकल्प माने और गन्ने की खेती को अधिकतम प्रोत्साहित करे।

मीडिया के सवालों के जवाब में मुख्यमंत्री ने बताया कि उन्होंने गुरदासपुर में नई सहकारी शुगर मिल को जनता को समर्पित किया है, जो राज्य के सहकारी और कृषि-औद्योगिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि 1980 में 1,250 टीसीडी की शुरुआती

पिड़ाई क्षमता से शुरू हुई यह मिल 1987 में बढ़ाकर 2,000 टीसीडी की गई थी और यह चार दशकों से अधिक समय से गन्ना उत्पादकों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इस क्षेत्र में वर्तमान में लगभग 80 लाख क्विंटल गन्ना उत्पादन होता है, जबकि पहले मिल की प्रति सीजन पिड़ाई क्षमता केवल 25 लाख क्विंटल थी। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार ने इस अंतर को पूरी तरह भरने के लिए इसका बड़े स्तर पर आधुनिकीकरण परियोजना शुरू की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नई मिल की पिड़ाई क्षमता 5,000 टीसीडी तक बढ़ा दी गई है, जो क्षेत्र में गन्ने की फसल की समय पर और कुशल पिड़ाई सुनिश्चित करेगी। उन्होंने कहा कि नया शुगर कॉम्प्लेक्स प्रसंस्करण क्षमता और किसानों की आय बढ़ाते हुए गन्ने का सुचारु उपयोग सुनिश्चित करेगा। इससे चीनी की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ परिवहन लागत भी कम होगी। भगवंत सिंह मान ने आगे कहा कि इससे क्षेत्र के हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलने के साथ-साथ स्थायी राजस्व स्रोत भी पैदा होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पंजाब के सहकारी क्षेत्र को मजबूत करने, ग्रामीण उद्योग को बढ़ावा देने और किसानों की समृद्धि तथा स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि एक अत्याधुनिक सल्फर-रहित रिफाइंड शुगर प्लांट भी स्थापित किया गया है, जो प्रीमियम ग्रेड चीनी उत्पादन करने में सक्षम है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि एक और प्रमुख विशेषता 28.5 मेगावाट को-जनरेशन पावर प्लांट का चालू होना है, जिसे पीएसपीसीएल को 20 मेगावाट अतिरिक्त बिजली निर्यात करने के लिए तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बिजली निर्यात से प्रत्येक पिड़ाई सीजन के दौरान लगभग 20 करोड़ रुपए सालाना राजस्व उत्पन्न होने का अनुमान है, जिससे मिल की वित्तीय स्थिरता को काफी मजबूती मिलेगी।

महिंद्रा ने एग्रोविजन 2025 में दिखाए वैकल्पिक ईंधन ट्रैक्टर, खेती के भविष्य की झलक

दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर विनिर्माता कंपनी, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने नागपुर में आयोजित एग्रोविजन 2025 में अपने नवीनतम वैकल्पिक ईंधन ट्रैक्टरों और उन्नत खेती प्रौद्योगिकियों का व्यापक प्रदर्शन

किया। इस अवसर पर केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री तथा एग्रोविजन नागपुर के संरक्षक श्री नितिन गडकरी और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

एग्रोविजन 2025 में महिंद्रा ने ऐसे ट्रैक्टर और इंजन तकनीकों को पहली बार सार्वजनिक रूप से साझा किया, जो आने वाले वर्षों में भारतीय खेती की लागत, ऊर्जा खपत और पर्यावरणीय प्रभावेंतीनों को बदलने की क्षमता रखते हैं।

महिंद्रा ने अपने लोकप्रिय युवो टेक् प्लेटफार्म पर आधारित नया सीएनजी/सीबीजी ट्रैक्टर प्रदर्शित किया। यह ट्रैक्टर कम्प्रेस्ड नेचुरल गैस, कम्प्रेस्ड बायोगैस और डीजल सीएनजी ड्युअल फ्यूल प्रणाली पर चलने की क्षमता रखता है। वैकल्पिक ईंधन के कारण ट्रैक्टर की परिचालन लागत काफी कम होती है और प्रदूषण उत्सर्जन में बड़ी कमी आती है। कंपनी का दावा है कि यह तकनीक किसानों को सस्ता, टिकाऊ और पर्यावरण हितैषी विकल्प प्रदान करेगी।

समारोह में पेश किया गया महिंद्रा का आधुनिक एथनॉल फ्लेक्स फ्यूल ट्रैक्टर इंजन कृषि क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण नवाचार है। यह इंजन गन्ना, मक्का, पराली और विभिन्न कृषि अवशेषों से बने वाले एथनॉल पर चल सकता है। पेट्रोल-एथनॉल मिश्रण का लचीलापन इस तकनीक को और भी व्यावहारिक बनाता है। भंडारण में आसानी और कम प्रदूषण उत्सर्जन इसे किसानों के लिए किफायती और पर्यावरण हितैषी विकल्प बनाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, यह तकनीक ऊर्जा स्वतंत्रता को बढ़ावा देगी और किसानों की आमदनी में भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी।

कार्यक्रम में प्रदर्शित महिंद्रा का इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कंपनी के ग्लोबल लाइटवेट प्लेटफार्म 'महिंद्रा ओजेए' पर आधारित है। पूरी तरह शून्य-उत्सर्जन वाली यह मशीन कम परिचालन लागत, बेहतर टॉर्क, तेज फास्ट चार्जिंग और आसान उपयोग जैसी सुविधाएं प्रदान करती है। यह ट्रैक्टर किसानों को बिना पावर ड्रॉप के स्मूथ ड्राइविंग और बेहतर उत्पादकता का अनुभव देने के लिए बनाया गया है। महिंद्रा के अनुसार, इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर भविष्य में खेती का पर्यावरण-अनुकूल स्वरूप तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

महिंद्रा का कहना है कि वैकल्पिक ईंधन - जैसे सीएनजी, सीबीजी, एथनॉल, बायोफ्यूल और इलेक्ट्रिक - भारत के लिए 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन लक्ष्य हासिल करने में अहम योगदान देंगे। चेन्नई स्थित महिंद्रा रिसर्च वैली में विकसित ये तकनीकें कंपनी की दशकों की शोध और इंजीनियरिंग विशेषज्ञता का परिणाम हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा के कृषि उपकरण व्यवसाय के अध्यक्ष, श्री वीजय नाकरा ने कहा, "महिंद्रा देश को वैकल्पिक ईंधन प्रौद्योगिकी की ओर ले जाने और स्वच्छ, स्मार्ट और वहनीय खेती के समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। एग्रोविजन 2025 में हमारी भागीदारी यही दर्शाती है कि हम भारतीय खेती के भविष्य को नई दिशा देने वाले नवाचार लगातार पेश कर रहे हैं।"

यूपी के किसानों को बड़ी सौगात - जल्द शुरू होगी कृषि यंत्रीकरण हेल्पलाइन

उत्तर प्रदेश सरकार खेती को आधुनिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाने जा रही है। कृषि विभाग जल्द ही कृषि यंत्रीकरण हेल्पलाइन शुरू करेगा, ताकि किसान खेती में मशीनों के उपयोग से जुड़ी जानकारी, समस्याओं और सुझावों को सीधे विभाग तक पहुंचा सकें।

कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही ने विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर हेल्पलाइन की रूपरेखा तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसानों की शिकायतों के त्वरित समाधान के लिए एक विशेष सेल भी बनाया जाएगा।

प्रदेश बनेगा कृषि यंत्र निर्माण का हब

कृषि मंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, ऐसे में छोटे व किफायती कृषि उपकरणों का विकास अत्यंत आवश्यक है।

सरकार का लक्ष्य है कि प्रदेश को कृषि यंत्र निर्माण का प्रमुख केंद्र बनाया जाए। इसके लिए स्थानीय कंपनियों के साथ-साथ अन्य राज्यों की बड़ी कंपनियों को भी यहां निर्माण इकाइयां स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

उन्होंने इम्पैनलमेंट प्रक्रिया को पूरी तरह ऑनलाइन करने, समय-सीमा तय करने और अभिलेखीय त्रुटियों को दूर करने के निर्देश भी दिए। भ्रष्टाचार रोकने के लिए सभी मशीनों पर लेजर कट यूनिक नंबर सुनिश्चित किया जाएगा।

आईआईटी रुड़की के साथ नई तकनीक पर मंथन

एक अन्य बैठक में प्रदेश में प्रस्तावित भू-इंजीनियरिंग आधारित कृषि मॉडल पर आईआईटी रुड़की के विशेषज्ञों के साथ चर्चा की गई। मंत्री ने पहले किए गए प्रयोगों की लागत, किसानों को हुए लाभ और परिणामों का पुनर्मूल्यांकन कर 15 दिन में विस्तृत रिपोर्ट देने को कहा।

इसके अलावा आधुनिक भूमि प्रबंधन कार्बन परियोजना पर भी विचार किया गया, जिसे पहले चरण में एक मंडल में लागू करने का प्रस्ताव है।

कृषि भवन में प्रदेश के कृषि मंत्री और राज्यमंत्री ने 'श्री अन्न (मिलेट्स) गैलरी' का शुभारंभ किया। यह गैलरी लोगों को मिलेट्स के महत्व, पोषण मूल्य और प्रसंस्करण तकनीकों की जानकारी देने के लिए तैयार की गई है। इसके साथ ही 20 व्यक्तियों क्षमता वाली नई लिफ्ट का भी लोकार्पण किया गया।

दिल्ली मे वायु-प्रदूषण - उद्योग-वाहन जिम्मेवार

धान पराली बेवजह बदनाम, फिर क्या है समाधान

डॉ. वीरेन्द्र सिंह लाठर,
पूर्व प्रधान वैज्ञानिक अनुसंधान
भारतीय कृषि अनुसंधान
संस्थान, नई दिल्ली
मो. 9416801607

दिल्ली में शाहजहां ने 1648 में लाल किला, चांदनी चौक आदि बनाकर इसे शानदार राजधानी बनाया। अंग्रेजों ने 1912 में इसे राजधानी घोषित करके दिल्ली को शहरी नियोजन से सुन्दर शहर बनाया। तब से दिल्ली भारत की राजधानी है। वर्तमान में दिल्ली की जनसंख्या का लगभग 34.6 मिलियन (3.46 करोड़) और जनसंख्या घनत्व लगभग 27,000 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जो दिल्ली को दुनिया भर में टोक्यो (जापान) के बाद सबसे ज्यादा जनसंख्या घनत्व वाली राजधानी बनाती है। जबकि दिल्ली की तुलना में अमेरीका की राजधानी वाशिंगटन, डी.सी. की वर्ष 2020 में जनसंख्या मात्र 7 लाख और वहां सरकारी व कार्पोरेट ऑफिस, जरूरी सेवा, अस्पताल आदि के इलावा कोई उद्योगिक ईकाई नहीं है।

आजादी के बाद, अदूरदर्शी सरकारी भ्रष्टतन्त्र ने दिल्ली को उद्योग नगरी बनाकर, दुनिया भर में सबसे ज्यादा प्रदूषित राजधानी शहर बना दिया। वर्ष 1901 में दिल्ली की जनसंख्या 4 लाख थी, जो 1947 में केवल 7 लाख हुई, लेकिन अगले 4 वर्षों में ही दुगनी होकर 17 लाख हो गई। 1951 जनगणना के अनुसार, दिल्ली की कुल जनसंख्या 1,744,072 में से 1,026,762 (58.9 प्रतिशत) लोग दिल्ली के बाहर पैदा हुए थे। सरकार ने शरणार्थियों को बसाने और उनके पुनर्वास व रोजगार आदि देने के लिए मुफ्त और रियायती दरों पर मकान, दूकान, उद्योग, बिजली, सस्ते ऋण आदि जैसी सुविधा प्रदान की। उद्योग और वाणिज्य सैक्टर को दी गई भारी रियायतों और बेहतर रोजगार सुविधाओं की बदोलत, आजादी के बाद दिल्ली में प्रवासी जनसंख्या प्रत्येक दशक में दुगनी होती गई। दिल्ली में अब 90 प्रतिशत जनसंख्या 1947 के बाद आये प्रवासियों की है। अगस्त 2025 में लगभग 73 लाख यानि 21 प्रतिशत दिल्ली वासी राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन में मुफ्त राशन ले रहे हैं, जो राजधानी की गरीबी की पोल खोल रहे हैं। जहां कई हजार अवैध गंदी बस्तियों-झुग्गी झोपड़ी कॉलोनियों का जमावड़ा, भीड़-भाड़ वाली टूटी-फूटी सड़कें, प्रदूषित वायु और यमुना का प्रदूषित पानी, अब दिल्ली की पहचान बन गए है।

दिल्ली में 1950 तक, केवल 8 हजार छोटे-बड़े उद्योग थे। जो 2021-22 में बढ़ कर 8.75 लाख हो गए, जिनमें 35 लाख से ज्यादा लोग कार्यरत हैं। जो दिल्ली में कर्मचारियों की कुल संख्या का लगभग 30 प्रतिशत है। फरवरी 2025 के आंकड़ों के अनुसार दिल्ली में लगभग 39 लाख पैट्रोल- डीजल चलित और 57 लाख इलेक्ट्रिक वाहन है। जबकि दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 3.3 करोड़ पैट्रोल-डीजल से चलने वाले वाहन हैं। दिल्ली के दोषपूर्ण शहरीकरण नियोजन मॉडल को अपनाकर पड़ोसी राज्यों ने 90 किलोमीटर घेरे में 50 से ज्यादा उद्योगिक नगर बसाकर, दिल्ली में प्रदूषण को कई गुणा बढ़ाया है।

दिल्ली में वायु प्रदूषण पूरे वर्ष रहता है। भारत सरकार के प्रेस सूचना ब्यूरो द्वारा 31 दिसम्बर 2024 को जारी सूचना के अनुसार, दिल्ली का वार्षिक औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) कोविड वर्ष-2020 को छोड़कर कई दशक से खराब श्रेणी में रहा है। जहा मानसून वर्षा के 3 महीने (जुलाई-सितंबर) को छोड़कर पूरे वर्ष एक्यूआई से 200 से ज्यादा रहता है, और अक्तूबर महीने में मानसून वापसी पर वायुगति कम होने एक्यूआई 300 के पार चला जाता है और सर्दी के 4 महीनों नवम्बर-फरवरी में हिमालय से आने वाली ठंडी हवाओं से तापमान गिरने के कारण प्रदूषण के कण वायुमंडलीय निचली सतह पर जमा होने से वायु प्रदूषण बहुत गंभीर हो जाता है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार, दिल्ली में कुल वायु प्रदूषण में अकेले वाहनों से होने वाले उत्सर्जन का योगदान लगभग 72 प्रतिशत है, जबकि उद्योग, सड़को और निर्माण गतिविधियो से उत्सर्जन होने वाला धुआं-धूल और दूषित जल आदि दूसरे मुख्य कारक है। लेकिन वैज्ञानिक तथ्यों के विपरीत, कई दशक से सरकारी भ्रष्टतंत्र दिल्ली में वायु प्रदूषण के लिए किसान और धान पराली को खलनायक के रूप पर प्रचारित करके, वायु प्रदूषण के असली गुनहगार वाहन-उद्योग को बचा रहे है। भारत सरकार के वायु गुणवत्ता जांच केन्द्र के अध्ययन के अनुसार वर्ष 2025 में 26 नवम्बर तक (330 दिन), दिल्ली के प्रदूषण में पराली का योगदान नगण्य रहा, जो सिर्फ 4 दिन 10 प्रतिशत से अधिक रहा है।

सरकार करोड़ों रूपये वार्षिक बर्बाद करके, अव्यावहारिक एक्स सीटू विधि (खेत से पराली के बंडल बना कर उद्योग में उपयोग), बायोडीकंपोजर छिड़काव से पराली प्रबंधन आदि से किसानों को भ्रमित कर रही है। 6 नवंबर 2025 को, हरियाणा के मुख्य सचिव ने अपनी रिपोर्ट में स्वीकार किया कि प्रदेश में 40 लाख एकड धान फसल से उत्पादित कुल 12 मिलियन टन पराली में से मात्र 1.9 मिलियन टन (लगभग 16 प्रतिशत) का प्रबंधन एक्स सीटू विधि से हुआ है। जबकि बाकि 84 प्रतिशत धान पराली का प्रबंधन किसानों ने इन-सीटू विधि (पराली को खेत में दबाकर जैविक खाद बनाना) आदि से किया। इसलिए सरकार को पर्यावरण हितैषी इन-सीटू समाधान के लिए किसानों को 2500 रूपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन देना चाहिए और अपने वर्ष 2018 के आदेश 'कम्बाईन हार्वेस्टर पर एसएमएस अनिवार्य' करने को सख्ती से लागू करना चाहिए।

वायु प्रदूषण के मुख्य कारकों वाहन-उद्योगो से उत्सर्जन के खिलाफ सरकार द्वारा ठोस कारवाई नही करना दुर्भाग्यपूर्ण है, और सरकार कृत्रिम बारिश, सड़को पर पानी छिड़काव जैसे नौटंकी प्रचार से जनता को भ्रमित कर रही है। श्री एम.सी. मेहता की जनहित याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने 1996 में दिल्ली में प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को शहर से बाहर स्थानांतरित करने के आदेश दिए थे। इस निर्णय ने भारत में पर्यावरण कानून में 'पूर्ण दायित्व सिद्धांत' और 'प्रदूषक भुगतान सिद्धांत' को स्थापित किया। लेकिन दूर्भाग्य से सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को सरकारी भ्रष्टतंत्र ने वोट और नोट के लालच में प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया। जिसके दुष्प्रभाव से दिल्ली में आज लाखों वायु प्रदूषण फैलाने और यमुना जल को प्रदूषित करने वाले उद्योग और पैट्रोल-डीजल चलित करोड़ों वाहन लगातार प्रदूषण फैला रहे हैं।

निसंदेह दिल्ली में प्रदूषण को नियंत्रित करने को सरकार को कोरे प्रचार और लीपापोती छोड़ कर, सर्वोच्च न्यायालय के आदेश प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों-वाहनों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से बाहर स्थानांतरित करने के लिए बीजिंग माडल के आधार पर कठोर नियम लागू करने होंगे। तभी दिल्ली भारत के जन जन की प्यारी दिल्ली कहलाएगी।

कृषि एवं कृषि संबंधित विषयों पर
आधुनिक जानकारी लेने हेतु पढ़ें
खेती संदेश
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

कृषि एवं कृषि सहायक
धंधों की आधुनिक
जानकारी से भरपूर

एक वर्ष में 52 अंक
किसान भाईयों व डीलर/डिस्ट्रीब्यूटरों के लिए
चंदों में विशेष छूट
एक वर्ष 400/- रुपए
दो वर्ष 700/- रुपए
पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :
90410-14575
KHETI DUNIYAN
TID - 62763351
चंदे भेजने हेतु QR कोड स्कैन करें।
खेती संदेश (कृषि साप्ताहिक)
के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड, पटियाला